वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय

जौनपुर, उ0प्र0 –222001

एम.ए. हिन्दी, पाठ्यक्रम

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुक्रम में सत्र 2022–23 से प्रभावी)

एम.ए.हिंदी, पाठ्यक्रम समिति

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशा-निर्देशों के अनुरूप सत्र 2022-23 से एम.ए. प्रथम सेमेस्टर से लागू

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	कॉलेज/विश्वविद्यालय
1.	प्रो. विनय कुमार दूबे	आचार्य	हिंदी	स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर
2.	डॉ. संजय चतुर्वेदी	सह-आचार्य	हिंदी	स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर
3.	डॉ.ऊषा भारती	सहायक आचार्य	हिंदी	स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गाज़ीपुर
4.	डॉ.संजय कुमार सुमन	सहायक आचार्य	हिंदी	स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाज़ीपुर
5.	डॉ.मधूलिका मिश्रा	सह आचार्य	हिंदी	गोविंद वल्लभ पंत स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्रतापगंज, जौनपुर
6.	डॉ.सुरेन्द्र प्रताप सिंह यादव	सह-आचार्य	हिंदी	समता स्नातकोत्तर महाविद्यालय सादात, गाज़ीपुर
7.	डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा शास्त्री	सह-आचार्य	हिंदी	हिंदू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जमानियां, गाज़ीपुर
8.	डॉ. अमलदार ' नीहार '	सह-आचार्य	हिंदी	श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया
9.	प्रो. अनुराग कुमार	आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष	हिंदी	महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

डॉ.(अमलदार "नीहार")
वाह्य विशेषज्ञ

प्रो.(अनुराग कुमार)
वाह्य विशेषज्ञ

प्रो.(विनय कुमार दूबे)
संयोजक

डॉ.(संजय चतुर्वेदी)
परास्नातक सदस्य

डॉ.(ऊषा भारती)
परास्नातक सदस्य

डॉ.(अखिलेश कुमार शर्मा शास्त्री)
स्नातक सदस्य

डॉ.(मधूलिका मिश्रा)
स्नातक सदस्य

डॉ.(संजय कुमार सुमन)
परास्नातक सदस्य

डॉ.(सुरेन्द्र प्रताप सिंह यादव)
स्नातक सदस्य

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्रों की सेमेस्टरवार प्रश्न-पत्र सारणी

(विषय–हिंदी)

एम.ए. (प्रथम वर्ष)

वर्ष	सेमेस्टर	प्रश्न-पत्र	कोर्स/प्रश्न-पत्र कोड	प्रश्न-पत्र का शीर्षक	लिखित/ प्रायोगिक	क्रेडिट	पूर्णांक
4/ बीए(चतुर्थ वर्ष)/ **एम.ए. (प्रथम वर्ष)**	**VII**	प्रथम	A010701T	आदिकालीन काव्य	लिखित	5	25+75 =100
		द्वितीय	A010702T	भक्तिकालीन काव्य	लिखित	5	25+75 =100
		तृतीय	A010703T	रीतिकालीन काव्य	लिखित	5	25+75 =100
		चतुर्थ	A010704T	भारतीय साहित्यशास्त्र एवं हिंदी आलोचना	लिखित	5	25+75 =100
		पंचम	**A010705R**	**वृहद शोध परियोजना**	**शोधप्रबंध/ डिजर्टेशन**	**4**	**...**
4/बी.ए. (चतुर्थ वर्ष)/ **एम.ए. (प्रथम वर्ष)**	**VIII**	प्रथम	A010801T (A) (अथवा) A010801T (B)	छायावादी काव्य (अथवा) भारतेंदु एवं द्विवेदी युगीन काव्य	लिखित	5	25+75 =100
		द्वितीय	A010802T(A) (अथवा) A010802T (B) (अथवा) A010802T(C)	नाट्य साहित्य (अथवा) कथा साहित्य (अथवा) निबंध एवं अन्य गद्य विधाएँ	लिखित	5	25+75 =100
		तृतीय	A010803T	भाषा विज्ञान	लिखित	5	25+75 =100
		चतुर्थ	A010804T	पाश्चात्य साहित्यशास्त्र	लिखित	5	25+75 =100
		पंचम	**A010805R**	**वृहद शोध परियोजना (मूल्यांकन)**	**शोधप्रबंध/ डिजर्टेशन**	**4**	**100**

»एम.ए. (प्रथम वर्ष) में छात्र को एक माइनर इलेक्टिव पेपर भी लेना होगा। यह मुख्य विषय से अलग महाविद्यालय में उपलब्ध किसी अन्य संकाय के किसी एक विषय का होगा। यह पेपर 4 क्रेडिट का होगा।

» वृहद शोध परियोजना के अंतर्गत एक टॉपिक चुनना होगा। शोधप्रबंध का मूल्यांकन प्रत्येक वर्ष के अंत में शोध-निर्देशक तथा वाह्य परीक्षक द्वारा संयुक्त रूप से 100 अंकों में किया जाएगा।

एम.ए. (द्वितीय वर्ष)

वर्ष	सेमेस्टर	प्रश्न-पत्र	कोर्स/प्रश्न-पत्र कोड	प्रश्न-पत्र का शीर्षक	लिखित/ प्रायोगिक	क्रेडिट	पूर्णांक
5/ **एम.ए.(द्वितीय वर्ष)**	**IX**	प्रथम	A010901T (A) (अथवा) A010901T (B)	छायावादोत्तर काव्य (अथवा) राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्यधारा	लिखित	5	25+75= 100
		द्वितीय	A010902T (A) (अथवा) A010902T (B))	लोकसाहित्य (अथवा) भोजपुरी साहित्य	लिखित	5	25+75= 100
		तृतीय	A010903T	हिंदी साहित्य का इतिहास	लिखित	5	25+75= 100
		चतुर्थ	A010904T	प्रयोजनमूलक हिंदी एवं शोध प्रविधि	लिखित	5	25+75= 100
		पंचम	**A010905R**	**वृहद शोध परियोजना**	**शोधप्रबंध/ डिजर्टेशन**	**4**	**...**
5/ **एम.ए.(द्वितीय वर्ष)**	**X**	प्रथम	A011001T (A) (अथवा) A011001T (B)	समकालीन काव्य (अथवा) नवगीत	लिखित	4	25+75= 100
		द्वितीय	A011002T (A) (अथवा) A011002T (B)	हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि (अथवा) सिनेमा और हिंदी साहित्य	लिखित	4	25+75= 100
		तृतीय	A011003T (A) (अथवा) A011003T (B)	अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य (अथवा) हिंदी पत्रकारिता	लिखित	4	25+75= 100
		चतुर्थ	A011004T (A) (अथवा) A011004T (B) (अथवा) A011004T (C)	साहित्यकार का विशेष अध्ययन : भारतेंदु हरिश्चंद्र (अथवा) साहित्यकार का विशेष अध्ययन : प्रेमचंद (अथवा) साहित्यकार का विशेष अध्ययन : जयशंकर प्रसाद	लिखित	4	25+75= 100
		पंचम	**A011005R**	**वृहद शोध परियोजना (मूल्यांकन)**	**शोधप्रबंध/ डिजर्टेशन**	**4**	**100**
		षष्ठ	**A011006P**	**मौखिकी/साहित्यिक दक्षता परीक्षण**	**मौखिकी**	**4**	**100**
Credits:- **Year-1 (T+R+Minor)=40+8+4=52** **Year-2 (T+R+P)=36+8+4=48**				**Maximum Marks:** **Year-1 (T+R+Minor)=800+100+100=1000** **Year-2 (T+R+P)=800+100+100=1000** **Total=Year(1+2)=1000+1000=2000**			

प्री-पी–एच.डी./पी–एच.डी. कोर्स वर्क पाठ्यक्रम के प्रश्न-पत्रों की सेमेस्टरवार प्रश्न-पत्र सारणी

(विषय–हिंदी)

वर्ष	सेमेस्टर	प्रश्न-पत्र	कोर्स/प्रश्न-पत्र कोड	प्रश्न-पत्र का शीर्षक	लिखित/ प्रायोगिक	क्रेडिट	पूर्णांक
6	XI	प्रथम	A011101T	वैचारिक एवं सैद्धांतिक विकास	लिखित	6	25+75=100
6	XI	द्वितीय	A011102T	सामयिक संदर्भ	लिखित	6	25+75=100
6	XI	तृतीय	A011103T	शोध प्रविधि एवं कम्प्यूटर	लिखित	4	25+75=100
Credits: 6+6+4=16				**Maximum Marks: 100+100+100=300**			

वीर बहादुर सिंह विश्वविद्यालय जौनपुर हेतु
(राष्ट्रीय-शिक्षा-नीति 2020 में जारी दिशा-निर्देशों के अनुरुप एम0ए0 हिंदी का पाठ्यक्रम)
सत्र- 2022-2023 से लागू

निर्देश :

हिंदी के इस पाठ्यक्रम में कुल **4 सेमेस्टर** होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर में **4-4 प्रश्न-पत्रों** की लिखित परीक्षा होगी। सेमेस्टर-VII, सेमेस्टर-VIII, सेमेस्टर-IX एवं सेमेस्टर-X के सभी प्रश्नपत्रों की लिखित परीक्षा हेतु **75 अंक** तथा **आंतरिक मूल्यांकन** हेतु **25 अंक** निर्धारित है। प्रत्येक प्रश्न-पत्र हेतु **5 क्रेडिट** का प्रावधान है, किंतु अंतिम सेमेस्टर (सेमेस्टर-X) में प्रत्येक प्रश्न-पत्र **4 क्रेडिट** के होंगे।

प्रश्नपत्रों का खण्ड विभाजन :

प्रत्येक प्रश्नपत्र **तीन खण्डों** में विभाजित होंगे— खण्ड-अ, खण्ड-ब तथा खण्ड-स।

खण्ड-अ : इस खण्ड में सम्बंधित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से अतिलघूत्तरीय प्रकार के कुल **10 प्रश्न** पूछे जाएंगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए **2 अंक** निर्धारित है। इस प्रकार, इस खंड में कुल 10×2=**20 अंक** निर्धारित है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए अधिकतम **शब्द-सीमा 50** होगी।

खण्ड-ब : इस खंड में सम्बंधित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से लघूत्तरीय प्रकार के कुल 8 प्रश्न मुद्रित होंगे, जिनमें से **5 प्रश्नों** के उत्तर देने होंगे। इसमें यदि व्याख्या के प्रश्न होंगे तब उस स्थिति में व्याख्या के 3 प्रश्न करने अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए **7 अंक** निर्धारित है। इस प्रकार, इस खंड में कुल 5×7=**35 अंक** निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए अधिकतम **शब्द-सीमा 200** होगी।

खण्ड-स : इस खंड में सम्बंधित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से निबंधात्मक-समीक्षात्मक प्रकार के कुल **4 प्रश्न** मुद्रित होंगे, जिनमें से केवल **2 प्रश्नों के** उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए **10 अंक** निर्धारित है। इस प्रकार, इस खंड में कुल 2×10=**20 अंक** निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए अधिकतम **शब्द-सीमा 500** होगी।

सेमेस्टर-VII, VIII, IX, X के प्रत्येक प्रश्नपत्र हेतु अंक विभाजन सारणी

खण्ड-अ : अतिलघूत्तरीय प्रश्न (शब्द सीमा- 50)	10×2 = 20 अंक
खण्ड-ब : लघूत्तरीय प्रश्न (शब्द-सीमा - 200)	5×7 = 35 अंक
खण्ड-स : निबंधात्मक प्रश्न (शब्द सीमा - 500)	2×10 = 20 अंक

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का विस्तृत विवरण

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-VII**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
प्रथम	**A010701T**	**आदिकालीन काव्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

आदिकाल साहित्यिक परंपराओं के निर्माण का काल है। इस काल में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश में तो रचनाएं हो ही रही थीं, साथ ही अपभ्रंश से धीरे-धीरे मुक्त होती हुई हिंदी भी अपना स्वरूप ग्रहण कर रही थी। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी के उद्भवकालीन रूप से परिचित कराना है।

इकाई-1 : आदिकाल– नामकरण, परिस्थितियाँ (राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक), प्रवृत्तियाँ, साहित्यिक रूप (सिद्ध, नाथ, रासो, जैन, लौकिक)।

इकाई-2 : सरहपा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, काव्यगत विशेषताएँ, भाषा।

10 दोहे

इकाई-3 : गोरखनाथ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, नाथपंथ, नाथपंथ की विशेषताएँ, हठयोग साधना।

10 पद

इकाई-4 : विद्यापति : जीवन-वृत्त, कृतियाँ, भक्त कवि अथवा श्रृंगारिक कवि, विद्यापति एवं अवहट्ट, पदावली व कीर्तिलता का काव्य-वैशिष्ट्य, वर्ण-विषय तथा भाषा।

पदावली–10 पद, कीर्तिलता–10 पद

इकाई-5 : चंदबरदाई : जीवन-वृत्त, पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, रासो के संस्करण, रासो की भाषा।

पृथ्वीराज रासो (रेवातट) [चयनित अंश]

अनुमोदित पाठ्य ग्रंथ : "आदिकालीन काव्य"

सम्पादक :

1. **प्रो. विनय कुमार दूबे, आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाज़ीपुर**
2. **प्रो. अखिलेश कुमार शर्मा 'शास्त्री', आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, हिंदू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जमानियां, गाज़ीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. दोहाकोश – सम्पा0 महा0 राहुल सांकृत्यायन (बिहार-राष्ट्र-भाषा परिषद्)
2. गोरखबानी – पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल
3. गोरखनाथ और उनका युग – रांगेय राघव
4. उत्तरी भारत की संत परम्परा – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
5. हिंदी साहित्य का आदिकाल – डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. गोरखनाथ और उनका हिंदी साहित्य – कमल सिंह
7. पृथ्वीराज रासो – नागरी प्रचारिणी सभा
8. संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो – हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह
9. पृथ्वीराज रासो : भाषा और साहित्य – डॉ0 नामवर सिंह
10. पृथ्वीराज रासो सार – सम्पा0 कन्हैया सिंह
11. विद्यापति की पदावली – रामवृक्षबेनीपुरी
12. विद्यापति की पदावली– वसंत कुमार माथुर
13. विद्यापति – जनार्दन सिंह
14. कीर्तिलता और अवहट्ट– डॉ0 शिवप्रसाद सिंह
15. विद्यापति की काव्य साधना– देशराज सिंह भाटी
16. कीर्तिलता– सम्पा0 बाबूराम सक्सेना
17. प्राचीन काव्य के प्रतिनिधि कवि – डॉ. मान्धाता राय
18. हिंदी के आदिकवि विद्यापति एवं अन्य निबंध – डॉ. मान्धाता राय

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-VII**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
द्वितीय	**A010702T**	**भक्तिकालीन काव्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

भक्तिकालीन काव्य धर्म-दर्शन, भक्ति एवं चरित्र निर्माण का संदेश देता है। यह साहित्य गुण एवं परिमाण दोनों दृष्टियों से पाठक में पूर्ण उत्कर्ष पैदाकर आनन्द प्रवाह करने में सक्षम तथा शिक्षार्थियों को मानवता के कल्याण कल्याण का प्रेरक साहित्य है। इस प्रश्नपत्र का अध्ययन शिक्षार्थियों में मानवीय गुणों की अभिवृद्धि करेगा।

इकाई-1 : भक्ति : अर्थ व स्वरूप, भक्ति का उदय, भक्ति-आंदोलन

भक्तिकाल : काल-सीमा, परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ, भक्तिकाल की शाखाएँ-उपशाखाएँ, भक्तिकाल – स्वर्णयुग।

इकाई-2 : संत कबीर – जीवन-वृत्त, रचनाएँ, काव्यगत विशेषताएँ, कबीर की भाषा, कबीर की भक्ति भावना,

कबीर का दार्शनिक मत, रहस्यवाद, कबीर के राम, कबीर का भक्त तथा समाज सुधारक रूप, कबीर की प्रासंगिकता।

साखी – 30 दोहे (चयनित) , सबद – 5 पद

इकाई-3 : मलिक मुहम्मद जायसी – जीवन-वृत्त, रचनाएँ, मसनवी शैली और पद्मावत, जायसी का रहस्यवाद, प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा में पद्मावत का स्थान, पद्मावत-अन्योक्ति या समासोक्ति काव्य, पद्मावत में विरह वर्णन, पद्मावत की काव्यगत विशेषताएँ। **पद्मावत– एक खण्ड** (व्याख्या)

इकाई-4 : महाकवि सूरदास – जीवन-वृत्त, रचनाएँ, काव्यगत विशेषताएँ, सूरदास की भाषा, सूरदास की भक्ति भावना, सूर काव्य का दार्शनिक आधार, पुष्टिमार्ग, अष्टछाप, सूर–वात्सल्य रस सम्राट, सूरदास का भ्रमरगीत, सूर की सहृदयता, भावुकता एवं वाग्विद्रधता, सूर का श्रृंगार वर्णन। **25 पद** (सूरसागर से चयनित) (व्याख्या)

इकाई-5 : गोस्वामी तुलसीदास– जीवन-वृत्त, रचनाएँ, काव्यगत विशेषताएँ, तुलसी की भाषा, तुलसीदास की भक्ति भावना, तुलसीदास का दार्शनिक मत, तुलसी का समन्वयवाद, तुलसीदास की सहृदयता, रामकाव्य परम्परा में रामचरितमानस का स्थान। **रामचरितमानस** (एक काण्ड से चयनित अंश),

विनयपत्रिका – 5 पद, कवितावली – 5 छंद, गीतावली – 5 पद, दोहावली – 5 दोहे

अनुमोदित पाठ्यग्रन्थ : **"भक्तिकालीन काव्य"**

सम्पादक :

1. **प्रो. सुषमा सिंह, आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर**
2. **प्रो. धीरेंद्र कुमार पटेल, आचार्य एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदलापुर, जौनपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. कबीर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. कबीर – बाबू श्यामसुन्दरदास
3. कबीर : एक अनुशीलन – डॉ0 रामकुमार वर्मा
4. कबीर की विचारधारा – डॉ0 गोविंद त्रिगुणायत
5. कबीर : व्यक्तित्व और कृतित्व – चंद्र मोहन सिंह
6. कबीर साहित्य की परख – परशुराम चतुर्वेदी
7. कबीर – विजयेंद्र स्नातक
8. कबीर मीमांसा – रामचंद्र तिवारी
9. कबीर दास विविध : आयाम – संपा0 प्रभाकर श्रोत्रिय
10. पद्मावत – वासुदेवशरण अग्रवाल
11. त्रिवेणी – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
12. जायसी – विजयदेव नारायण साही
13. मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य – डॉ0 शिवसहाय पाठक
14. जायसी का पद्मावत : काव्य और दर्श – डॉ0 गोविंद त्रिगुणायत
15. सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी
16. महाकवि सूरदास – नंददुलारे वाजपेई
17. भक्ति आंदोलन और सूर का काव्य – मैनेजर पांडेय

18. सूरदास : नये सन्दर्भ – मांधाता राय
19. सूरदास और उनका साहित्य – हरवंशलाल शर्मा
20. सूर की काव्यकला – मनमोहन गौतम
21. सूरदास – ब्रजेश्वर वर्मा
22. सूर की काव्य साधना – गोविंद राम शर्मा
23. रामचरितमानस–गीताप्रेस
24. विनयपत्रिका – गीताप्रेस
25. कवितावली – गीताप्रेस
26. तुलसी काव्य मीमांसा – उदय भानु सिंह
27. तुलसी और उनका युग – राजपति दीक्षित
28. तुलसी सन्दर्भ – डॉ. नगेन्द्र
29. तुलसीदास और उनका काव्य – रामनरेश त्रिपाठी
30. परम्परा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा
31. लोकवादी तुलसीदास – विश्वनाथ त्रिपाठी
32. भक्ति काल और लोकजीवन – शिव कुमार मिश्र
33. मानस दर्शन – श्री कृष्णलाल
34. तुलसी दर्शन – बलदेव प्रसाद मिश्र
35. तुलसी : सन्दर्भ और दृष्टि – केशव प्रसाद मिश्र एवं वासुदेव सिंह
36. तुलसी-साहित्य-चिंतनधारा- मुनीन्द्र तिवारी
37. साहित्य : संवेदना और विचारधारा – डॉ. अमलदार 'नीहार'

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-VII**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
तृतीय	**A010703T**	**रीतिकालीन काव्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

रीतिकालीन काव्य ने सैद्धांतिक दृष्टि से भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा को हिंदी में अवतरित करते हुए विवेचन एवं प्रयोग द्वारा रसवाद की प्रतिष्ठा की है। शिक्षार्थियों में यह प्रश्नपत्र भाषा, धर्म, दर्शन, चरित्र-निर्माण, परिवेश एवं परिस्थिति को समझने की शक्ति विकसित कर सकेगा।

इकाई-1 : रीतिकाल : नामकरण, सीमांकन, परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ।

रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त काव्य।

इकाई-2 : केशवदास– जीवनवृत्त, कृतियाँ, संवाद सौष्ठव, केशव का आचार्यत्व, अलंकार विधान भाषा।

रसिकप्रिया – चयनित अंश, कविप्रिया– चयनित अंश,

रामचन्द्रिका– हनुमान–रावण संवाद, रावण–अंगद संवाद

इकाई-3 : बिहारी : जीवनवृत्त, कृतित्व, काव्यगत विशेषताएँ, भाषा, सौंदर्य भावना, बिहारी की बहुज्ञता, संयोग एवं वियोग वर्णन। **30 दोहे**

इकाई-4 : भूषण– व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भूषण का युगबोध एवं राष्ट्रीयचेतना, काव्यगत विशेषताएँ, भूषण काव्य की अंतर्वस्तु। **शिवाबावनी – 10 छंद, छत्रसाल प्रशस्ति– 10 छंद**

इकाई-5 : घनानन्द : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, प्रेमनिरूपण, विरह वेदना, काव्यगत सौष्ठव। **20 छंद**

अनुमोदित पाठ्यग्रन्थ : "रीतिकालीन काव्य"

सम्पादक :

1. **डॉ. संजय चतुर्वेदी, सह-आचार्य, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजीपुर**
2. **डॉ. अमित कुमार, सहायक-आचार्य, हिंदी विभाग, हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जमानियां, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ:

1. केशव कौमुदी – लाला भगवानदीन
2. केशव और उनका साहित्य – विजयपाल सिंह
3. केशव का आचार्यत्व – विजयपाल सिंह
4. केशवदास एक अध्ययन – रामरतन भटनागर
5. बिहारी सतसई – सम्पा0 जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
6. बिहारी की वाग्विभूति – आचार्य विभवनाथ प्रसाद मिश्र
7. हिंदी साहित्य का अतीत, भाग 2 – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
8. रीतिकाल की भूमिका – डॉ0 नगेंद्र
9. हिंदी रीति साहित्य – डॉ भागीरथ मिश्र
10. बिहारी का नया मूल्यांकन – डॉ0 बच्चन सिंह
11. बिहारी और उनका साहित्य – हरबंश लाल शर्मा
12. बिहारी और घनानंद – परमलाल गुप्त
13. बिहारी अनुशीलन – डॉ0 सरोज गुप्ता
14. भूषण ग्रंथावली– आचार्य केशव प्रसाद मिश्र
15. भूषण और उनका साहित्य – राजमल बोरा
16. घनानन्द कवित्त – सम्पा0 आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
17. घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – डॉ0 मनोहर लाल गौड़
18. रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना – बच्चन सिंह
19. रीतिकाव्य कोश – विजय पाल सिंह

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-VII**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
चतुर्थ	**A010704T**	**भारतीय साहित्यशास्त्र एवं हिंदी आलोचना**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

काव्यशास्त्र, काव्य और साहित्य का दर्शन तथा विज्ञान है। युगानुरूप परिस्थितियों के अनुसार काव्य और साहित्य का शिल्प बदलता ही रहता है। भारतीय आलोचना जीवन की समस्या को सुलझाने की शक्ति विकसित करती है। शिक्षार्थी इस प्रश्नपत्र में इन गुरों को सीख सकेंगे एवं अपनी साहित्यिक प्रतिभा का विकास कर सकेंगे।

इकाई-1 : काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं शब्द शक्ति

भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा : परिचयात्मक पर्यावलोकन

इकाई-2 : रस सिद्धांत : रस सम्प्रदाय का इतिहास, रस का स्वरुप, रस के अंग, रस-निष्पत्ति, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।

अलंकार सिद्धांत : अलंकार संप्रदाय का इतिहास, अलंकार की

अवधारणा, मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण, अलंकार एवं अन्य संप्रदाय।

इकाई-3 : रीति सिद्धांत : रीति सिद्धांत का इतिहास, रीति की अवधारणा, रीति एवं गुण, रीति एवं कला, रीतियों का भौगोलिक-प्रादेशिक आधार, रीति– भेद, स्थापनाएँ एवं मूल्यांकन।

ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि संप्रदाय का इतिहास, ध्वनि के विविध अर्थ, ध्वनि का मूल स्रोत, ध्वनि की अवधारणा।

इकाई-4 : वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति सिद्धांत का इतिहास, वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, वक्रोक्ति एवं अन्य काव्य सिद्धांत।

इकाई-5: हिंदी आलोचना का विकास : संक्षिप्त परिचय

प्रमुख हिंदी आलोचकों की आलोचना पद्धति– आचार्य रामचंद्र शुक्ल के आलोचनात्मक प्रतिमान, नन्ददुलारे वाजपेयी की समीक्षा दृष्टि, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की समीक्षा पद्धति, डॉ. रामविलास शर्मा की समीक्षा पद्धति, दूसरी परम्परा के अन्वेषक नामवर सिंह की समीक्षा पद्धति।

सहायक ग्रंथ :

1. भारतीय काव्यशास्त्र व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिंदी आलोचना – डॉ0 रामचन्द्र तिवारी
2. काव्यशास्त्र – डॉ0 भागीरथ मिश्र
3. रस विमर्श – डॉ0 राम मूर्ति त्रिपाठी
4. भारतीय काव्यशास्त्र की नई व्याख्या – डॉ0 राममूर्ति त्रिपाठी
5. रस मीमांसा – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
6. रस सिद्धांत – डॉ नगेंद्र
7. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ0 सत्यदेव चौधरी
8. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ0 तारकनाथ बाली
9. भारतीय साहित्य शास्त्र कोश – राजवंश सहाय
10. समीक्षा दर्शन – रामलाल सिंह
11. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धांत – रघुवंश राय हीरा
12. कविता के प्रतिमान – डॉ0 रवींद्र भ्रमर
13. साहित्यालोचन – डॉ0 श्यामसुंदर दास
14. सिद्धांत और अध्ययन – बाबू गुलाब राय
15. काव्य रस : चिंतन और आस्वाद – डॉ0 भागीरथ मिश्र
16. काव्यशास्त्र विमर्श – डॉ0 राममूर्ति त्रिपाठी
17. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ0 अर्चना श्रीवास्तव

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			सेमेस्टर-VIII		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
चतुर्थ	**A010801T (A)**	**छायावादी काव्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

छायावाद विशेष रूप से हिंदी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की वह काव्यधारा है जिसे 1918 से 1936 की युगवाणी कहा जा सकता है। स्वच्छंदता की भावधारा का विशेष अध्ययन कर शिक्षार्थी कल्पना-वैभव की स्वच्छंद प्रवृत्ति का ज्ञान तो प्राप्त करेंगे ही; युगीन काव्य मर्म को आत्मसात कर सकेंगे।

इकाई-1 : छायावाद: अर्थ, परिभाषा, सीमांकन, विशेषताएँ।

इकाई-2 : जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व–कृतित्व, कामायनी का काव्यगत सौंदर्य, कामायनी का महाकाव्यत्व, कामायनी की दार्शनिकता, समन्वय, रूपक योजना, बिम्ब योजना, भाषा-शैली।

'आँसू' काव्य : संवेदना और शिल्प

संकलित कविताएँ : कामायनी – (एक सर्ग), आँसू – (चयनित काव्यांश)

इकाई-3 : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : व्यक्तित्व–कृतित्व, काव्यगत विशेषताएँ, प्रकृति चित्रण, राष्ट्रीय एवं स्वातंत्र्य चेतना, निराला काव्य की प्रगतिशीलता, विद्रोही स्वरूप।

5 कविताएँ– तोड़ती पत्थर, जागो फिर एक बार, बादल राग (एक भाग), राम की शक्तिपूजा, सरोजस्मृति

इकाई-4 : सुमित्रानन्दन पंत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, काव्यगत विशेषताएँ, प्रकृति के सुकुमार कवि, सौन्दर्य बोध, भाषा।

5 कविताएँ– मौन निमंत्रण, नौका विहार, मोह, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र, परिवर्तन कविता (चयनित अंश)

इकाई-5 : महादेवी वर्मा : व्यक्तित्व–कृतित्व, काव्यगत विशेषताएँ, रहस्यवाद, प्रकृति चित्रण, विरह वेदना की अनुभूति, रहस्यवाद, महादेवी के काव्य में गीति तत्व, भाषा।

5 कविताएँ– पंथ रहने दो अपरिचित, मैं नीर भरी दुःख की बदली, जाग तुझको दूर जाना, बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, जो तुम आ जाते एक बार

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ– 'छायावादी काव्य'

सम्पादक :

1. **डॉ. संजय चतुर्वेदी, सह-आचार्य, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**
2. **डॉ. मधूलिका मिश्रा, सह-आचार्य, हिंदी विभाग, गोविंदवल्लभ पंत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, प्रतापगंज, जौनपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. कामायनी एक पुनर्विचार – गजानन माधव मुक्तिबोध
2. कामायनी का पुनर्मूल्यांकन – रामस्वरुप चतुर्वेदी
3. जयशंकर प्रसाद –नंददुलारे वाजपेई
4. जयशंकर प्रसाद – प्रभाकर माचवे
5. जयशंकर प्रसाद – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
6. प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास
7. प्रसाद का जीवन दर्शन, कला और कृतित्व – महावीर अधिकारी
8. प्रसाद का विकासात्मक अध्ययन – किशोरी लाल गुप्त
9. प्रसाद की कला – गुलाब राय
10. जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता – प्रभाकर श्रोत्रिय
11. कामायनी भाष्य – डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना
12. प्रसाद और उनकी कामायनी – डॉ0 उषा यादव
13. प्रसाद का काव्य – प्रेम शंकर
14. प्रसाद काव्य का नया मूल्यांकन – डॉ0 योगेश्वर
15. प्रसाद की कविता – भोलानाथ तिवारी
16. सुमित्रानंदन पंत – डॉ नगेंद्र
17. सुमित्रानंदन पंत – विश्वंभर मानव
18. सुमित्रानंदन पंत – नारायण दत्त पालीवाल
19. सुमित्रानंदन पंत – सदानंद प्रसाद गुप्त
20. सुमित्रानंदन पंत – शची रानी गुर्टू
21. निराला – नंददुलारे वाजपेयी
22. निराला की साहित्य साधना (भाग 3) – रामविलास शर्मा
23. क्रांतिकारी कवि निराला – डॉ0 बच्चन सिंह
24. निराला काव्य का अध्ययन – डॉ0 भागीरथ मिश्र
25. निराला साहित्य : एक आयाम – डॉ0 रामकुमार गुप्त
26. निराला की काव्यभाषा– डॉ0 शकुन्तला शुक्ल
27. निराला की आत्महंता आस्था – दूधनाथ सिंह
28. महाकवि निराला – संपा0 जानकी वल्लभ शास्त्री
29. निराला के सृजन सिद्धांत : विहग और मीन – अर्चना वर्मा
30. निराला : एक पुनर्मूल्यांकन
31. महादेवी वर्मा – जगदीश गुप्त
32. महादेवी : चिंतन व कला – इंद्रनाथ मदान
33. महादेवी – दूधनाथ सिंह
34. छायावाद की प्रासंगिकता – रमेश चंद्र शाह
35. छायावाद के गौरव चिह्न– डॉ0 श्रीपाल सिंह क्षेम
36. छायावाद – नामवर सिंह
37. कल्पना और छायावाद – केदारनाथ सिंह

अथवा

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-VIII**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
प्रथम	**A010801T (B)**	**भारतेंदु एवं द्विवेदी युगीन काव्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

भारतेंदु युग एवं द्विवेदी युग का साहित्य नवजागरणकालीन भारतीय समाज की चेतना और संघर्ष की दिशाओं को समझने के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। इस कालखंड का साहित्य छात्रोपयोगी एवं पठनीय है। विवेच्य साहित्य के प्रति छात्रों में आकर्षण एवं रुचि पैदा करना इस अध्ययन का उद्देश्य है।

इकाई-1 : आधुनिकता : अर्थ, अवधारणा। 1857 का संग्राम व राष्ट्रवाद का उदय, हिंदी नवजागरण, आधुनिककाल : परिस्थितियाँ।

भारतेंदुयुगीन काव्य की विशेषताएँ।

इकाई-2 : भारतेंदु हरिश्चंद : जीवनवृत्त, साहित्यिक अवदान, राजभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति का समन्वय, युगबोध एवं सामाजिक चेतना, काव्यगत विशेषताएँ।

संकलित रचनाएँ : प्रेममाधुरी (5 सवैया), यमुना वर्णन, नए जमाने की मुकरी (5 मुकरी), रोवहु सब मिलि आवहु भारत भाई।

इकाई-3 : द्विवेदीयुगीन काव्य तथा उसकी विशेषताएँ।

मैथिलीशरण गुप्त : जीवन परिचय एवं साहित्यिक परिचय, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, प्राचीनता एवं नवीनता का सामंजस्य, भाषा।

संकलित कविताएँ– भारत-भारती (अतीत खण्ड), साकेत (नवम सर्ग से चयनित काव्यांश), यशोधरा (सखि, वे मुझसे कहकर जाते)

इकाई-4 : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : व्यक्तित्व व कृतित्त्व, खड़ीबोली और हरिऔध का काव्य, काव्यगत विशेषताएँ।

संकलित कविताएँ– प्रियप्रवास (षष्ठ सर्ग का काव्यांश), चुभते चौपदे (चयनित काव्यांश), चोखे चौपदे (चयनित काव्यांश)

इकाई-5 : रामनरेश त्रिपाठी : व्यक्तित्व व कृतियाँ, साहित्यिक प्रदेय, काव्यगत विशेषताएँ, राष्ट्रीय चेतना एवं देशप्रेम।

5 कविताएँ– अस्तोदय की वीणा, कामना, स्वदेश प्रेम, अन्वेषण, युवकों की रणयात्रा

अनुमोदित ग्रंथ : 'भारतेंदु एवं द्विवेदीयुगीन काव्य'

सम्पादक :

1. **डॉ. शशिकला जायसवाल, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**
2. **डॉ. विभु प्रकाश सिंह, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण– रामविलास शर्मा

2. आधुनिक कवियों की काव्य साधना– राजेंद्र सिंह गौड़
3. भारतेंदु युगीन काव्य में लोक तत्व– विमलेश कांति वर्मा
4. आधुनिक हिंदी कवि और काव्य– डॉ0 रामचंद्र तिवारी, राजेंद्र बहादुर सिंह
5. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृतियां– डॉ0 शिवकुमार शर्मा
6. द्विवेदी युग का हिंदी काव्य– रामसकल राय शर्मा
7. युग और साहित्य– शांतिप्रिय द्विवेदी
8. भारतेंदु हरिश्चंद्र ग्रंथावली– नागरी प्रचारिणी सभा
9. द्विवेदी युगीन हिंदी काव्य– डॉ0 महेंद्र कुमार सिंह

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-VIII**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
द्वितीय	**A010802T (A)**	**नाट्य साहित्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

साहित्य के अध्ययन का लाभ निर्विवाद है। नाट्य विधाओं के अध्ययन से हमारी संवेदना व्यापक होती जाती है, जिससे हमारी सोच का दायरा बढ़ता है। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से शिक्षार्थियों को हमारे समाज, राजनीति, अतीत तथा आसपास के परिवेश को सच्चे अर्थों में समझने की दृष्टि मिल सकेगी।

इकाई-1 : नाटक : अर्थ एवं परिभाषा, स्वरूप, भेद, नाटक कला के तत्व

हिंदी नाटक : उद्भव एवं विकास।

इकाई-2 : 'चंद्रगुप्त' नाटक (जयशंकर प्रसाद) : समीक्षा, कथानक, संवाद योजना, पात्रों का वैशिष्ट्य, भाषा-शैली, अभिनेयता एवं रंगमंच की दृष्टि से चंद्रगुप्त नाटक

चंद्रगुप्त नाटक में नायक का निर्धारण, चंद्रगुप्त में प्रसाद की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, चंद्रगुप्त में इतिहास एवं कल्पना। **चंद्रगुप्त (उद्धृत अंश की व्याख्या)**

(अथवा)

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक (मोहन राकेश) : समीक्षा, कथानक, संवाद-योजना, पात्र-वैशिष्ट्य, भाषा-शैली, उद्देश्य, अभिनेयता एवं रंगमंच की दृष्टि से आषाढ़ का एक दिन, 'आषाढ़ का एक दिन' में कल्पना और ऐतिहासिकता। **आषाढ़ का एक दिन (उद्धृत अंश की व्याख्या)**

इकाई-3 : एकांकी : अर्थ एवं परिभाषा, स्वरूप, भेद, एकांकी कला के तत्व।

हिंदी एकांकी : उद्भव व विकास।

इकाई-4 : चयनित एकांकी :

डॉ0 रामकुमार वर्मा – औरंगजेब की आख़िरी रात, सेठ गोविंददास – सच्चा धर्म, उदयशंकर भट्ट – बीमार आदमी का इलाज, उपेंद्रनाथ अश्क़ – तौलिए, विष्णु प्रभाकर – सीमारेखा, जगदीशचन्द्र माथुर – भोर का तारा, लक्ष्मी नारायण लाल – बसंत ऋतु का नाटक, धर्मवीर भारती – सृष्टि का आख़िरी आदमी

इकाई-5 : चयनित एकांकियों की समीक्षा तथा उद्धृत अंशों की व्याख्या

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'एकांकी कुंज'

सम्पादक :

1. **डॉ. महेंद्र कुमार त्रिपाठी, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर**
2. **प्रो. पुष्पा सिंह, आचार्य, हिंदी विभाग, सहकारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मिहरावां, जौनपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन– डॉ जगन्नाथ प्रसाद मिश्र
2. मोहन राकेश और उनके नाटक – गिरीश रस्तोगी
3. आधुनिक हिंदी नाटक का अग्रदूत : मोहन राकेश – गोविंद चातक
4. हिंदी का गद्य साहित्य – डॉ0 रामचंद्र तिवारी
5. हिंदी नाटक का उद्भव और विकास – डॉ0 दशरथ ओझा
6. हिंदी नाटक इतिहास के सोपान – गोविंद चातक
7. हिंदी नाटक : आजकल – जयदेव तनेजा
8. हिंदी नाटक – बचन सिंह
9. प्रसाद के नाटक : सृजनात्मक धरातल और भाषिक चेतना – गोविंद चातक
10. हिंदी नाटक : मिथक और यथार्थ – रमेश गौतम
11. हिंदी एकांकी : उद्भव और विकास – डॉ0 रामचरण महेंद्र
12. एकांकी कला – डॉ0 रामकुमार वर्मा
13. हिंदी एकांकी – डॉ0 सिद्धनाथ कुमार
14. हिंदी एकांकी – डॉ0 सत्येंद्र
15. एकांकी नाटक – सम्पा0 प्रो0 अमरनाथ गुप्त

अथवा

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-VIII**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
द्वितीय	**A010802T (B)**	**कथा साहित्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

हिंदी का कथा साहित्य व्यापक एवं संवेदनशील है। कथा साहित्य के अध्ययन से छात्र-छात्राओं की कल्पनाशीलता में अभिवृद्धि होगी तथा उनका शब्द-भंडार एवं ज्ञान बढ़ेगा जो जीवन में उपयोगी होगा।

इकाई-1 : उपन्यास : अर्थ व परिभाषा, भेद। उपन्यास कला के तत्व।

हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास

इकाई-2 : उपन्यास

गोदान (प्रेमचंद) : समीक्षा, पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ, गोदान का उद्देश्य, गोदान की समस्याएँ, गोदान–कृषक जीवन का महाकाव्य, गोदान में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद।

गोदान– उद्धृत अंश की व्याख्या

(अथवा)

शेखर एक जीवनी-1 (अज्ञेय) : समीक्षा, शेखर की चारित्रिक विशेषताएँ, शेखर एक प्रशांत विद्रोही, शेखर एक जीवनी में मनोविश्लेषनात्मकता, शेखर एक जीवनी का उद्देश्य और साहित्यिक आदर्श

शेखर एक जीवनी-1 – उद्धृत अंश की व्याख्या

(अथवा)

डार्क हॉर्स (नीलोत्पल मृणाल) : समीक्षा, पात्रों का चारित्रिक वैशिष्ट्य, संवाद, ग्रामीण-कस्बाई युवा का महानगरीय परिवेश में समायोजन की जटिलता, उपन्यास की मूल संवेदना तथा समस्या, प्रतिस्पर्धी युग और युवा संघर्ष का चित्रण, उपन्यास का सामाजिक सरोकार, उपन्यास की भाषा-शैली।

डार्क हॉर्स– उद्धृत अंश की व्याख्या

इकाई-3 : कहानी : अर्थ एवं परिभाषा, भेद, कहानी कला के तत्व

हिंदी कहानी : उद्भव और विकास

इकाई-4 : संकलित कहानियाँ : एक टोकरी भर मिट्टी – माधवराव सप्रे, उसने कहा था– चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', पुरस्कार – जयशंकर प्रसाद, रोज(गैंग्रीन)– अज्ञेय, पत्नी – जैनेंद्र कुमार, रसप्रिया– फणीश्वरनाथ रेणु, परिंदे– निर्मल वर्मा, जहाँ लक्ष्मी कैद है– राजेन्द्र यादव, दोपहर का भोजन– अमरकांत, राजा निरबंसिया– कमलेश्वर

इकाई-5 : संकलित कहानियों की समीक्षा

अनुमोदित ग्रंथ : 'आधुनिक कहानियाँ'

सम्पादक :

1. **डॉ. नीरज सिंह, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, हंडिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हंडिया, प्रयागराज**
2. **डॉ. गंगेश दीक्षित, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. प्रेमचंद और उनका युग : रामविलास शर्मा
2. शेखर एक जीवनी : विविध आयाम – सम्पा0 डॉ. रामकमल राय
3. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा – रामदरश मिश्र

4. हिंदी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय
5. उपन्यास की संरचना– गोपाल राय
6. हिंदी उपन्यास का विकास – मधुरेश
7. हिंदी कहानी का विकास – मधुरेश
8. हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद – डॉ0 त्रिभुवन सिंह
9. हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग – डॉ0 त्रिभुवन सिंह
10. स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी उपन्यास – डॉ0 विनय दूबे
11. हिंदी उपन्यास साहित्य में आदर्शवाद – डॉ0 सर्वजीत राय
12. आज की कहानी – विजय मोहन सिंह
13. कहानी और कहानी – नामवर सिंह
14. आधुनिकता और मोहन राकेश – उर्मिला मिश्रा
15. हिंदी गद्य शैली का विकास – डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
16. प्रेमचंद : जीवन दृष्टि और संवेदना – संपादक डॉ0 कृष्ण कुमार सिंह
17. कहानी कला : सिद्धांत और विकास – डॉ सुरेश चंद्र शुक्ला
18. आज की हिंदी कहानी – डॉ0 धनञ्जय
19. नई कहानी का परिवेश एवं परिप्रेक्ष्य – डॉ0 रामकली सर्राफ
20. कुछ हिंदी कहानियां : कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी
21. हिंदी कहानी : प्रक्रिया और पाठ – सुरेंद्रचौधरी
22. हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास – लक्ष्मी नारायण लाल
23. साठोत्तरी कहानी : समग्र विवेचन – निवेदिता श्रीवास्तव

अथवा

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-VIII**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
द्वितीय	**A010802T (C)**	**निबंध एवं अन्य गद्य विधाएँ**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

साहित्य पढ़ने से स्वस्थ मनोरंजन होता है और हमारी कल्पना शक्ति में भी अभिवृद्धि होती है। हिंदी गद्य की विविध विधाएँ हैं। इनके अध्ययन से नए विचारों को सीखने समझने में शिक्षार्थियों को सुविधा होगी।

इकाई-1 : निबंध : अर्थ, परिभाषा, स्वरुप, प्रकार

निबंध : उद्भव एवं विकास

इकाई-2 : संकलित निबंध : दिल्ली दरबार दर्पण (भारतेंदु हरिश्चंद्र), कविता क्या है? (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल), कुटज (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी), परम्परा का मूल्यांकन (रामविलास शर्मा), मेरे राम का मुकुट भींग रहा है (विद्यानिवास मिश्र), महाकवि की तर्जनी (कुबेरनाथ राय), संस्कृति और सौंदर्य (नामवर सिंह)

इकाई-3 : हिंदी की अन्य कथेतर विधाओं का परिचय, परिभाषा एवं संक्षिप्त इतिहास।

आत्मकथा– **जूठन** (ओमप्रकाश बाल्मीकि) – चयनित अंश

जीवनी– **कलम का सिपाही** (अमृतराय) – चयनित अंश

इकाई-4 : संस्मरण– **काशीनाथ सिंह के संस्मरण** (चयनित अंश)

रेखाचित्र– **ठकुरी बाबा** (महादेवी वर्मा)

इकाई-5 : यात्रा-साहित्य – **अरे यायावर रहेगा याद** (अज्ञेय)– चयनित अंश

रिपोर्ताज– **जुलूस रुका है** (विवेकीराय)– चयनित अंश

अनुमोदित ग्रंथ : 'निबंध सप्तक'

सम्पादक :

1. **प्रो. सुषमा सिंह, आचार्य, हिंदी विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर**
2. **प्रो. धीरेंद्र कुमार पटेल, आचार्य, हिंदी विभाग, सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदलापुर, जौनपुर**

आनुमोदित ग्रंथ : 'गद्य विविधा'

1. **प्रो. सुधा सिंह, आचार्य, हिंदी विभाग, राजा श्रीकृष्णदत्त, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर**
2. **डॉ. सुरेंद्र प्रताप सिंह यादव, सह-आचार्य एवं अध्यक्ष, समता स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सादात, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी का गद्य साहित्य– डॉ. रामचन्द्र तिवारी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ0 नगेन्द्र, हरदयाल
3. हिंदी गद्य का विकास– मोहनलाल 'जिज्ञासु'
4. हिंदी निबंध– प्रभाकर माचवे
5. आधुनिक हिंदी गद्य– श्रीनिवास चतुर्वेदी, इंद्रनाथ मदान
6. आधुनिक हिंदी का जीवनी पर साहित्य– डॉ0 शांति खन्ना

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-VIII**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
तृतीय	**A010803T**	**भाषा विज्ञान**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

इसके अध्ययन से भाषा की मौलिक समझ का विकास होगा तथा भाषा सम्बन्धी विभिन्न नियमों की जानकारी से छात्र-छात्राओं का व्यावहारिक विकसित ज्ञान होगा, जिससे नवाचार की संभावना तो बढ़ेगी ही; साथ ही इससे

तार्किक ज्ञान के विकसित होने पर अनुसंधान की भी संभावनाएं बढ़ेगी।

इकाई-1 : भाषा : परिभाषा, तत्व, अंग, प्रकृति, विशेषताएं।

भाषा परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं।

भाषा के विभिन्न स्तर भेद– व्यक्ति बोली, विभाषा, मानक भाषा तथा उसके विविध रूप।

इकाई-2 : भाषा विज्ञान : स्वरूप और प्रकृति, विषय क्षेत्र, ज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंध, भाषा विज्ञान के अंग।

ध्वनि-विज्ञान : ध्वनि का अर्थ, ध्वनिग्राम तथा संध्वनि, ध्वनि–गुण तथा उसकी उपयोगिता, ध्वनि की उत्पत्ति-प्रक्रिया, वाग्यंत्र (ध्वनि तंत्र), ध्वनियों का वर्गीकरण, मानस्वर, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएं एवं कारण।

इकाई-3 : स्वनिम विज्ञान : स्वरूप, अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमों तथा उपस्वनों का अंकन, स्वनिम वितरण के सिद्धांत।

रूप विज्ञान (मारफोलॉजी) : शब्द और रूप (पद), संबंध तत्व एवं अर्थतत्व, संबंध तत्व के भेद, शब्द कोटियां, व्याकरणिक कोटियां।

इकाई-4 : वाक्य विज्ञान : वाक्य की अवधारणा, तत्व, वाक्य एवं पद का संबंध, वाक्य के भेद, वाक्य-विश्लेषण, वाक्य के निकटस्थ अवयव, गहन संरचना और बाह्य संरचना, वाक्य परिवर्तन की दिशाएं और कारण।

अर्थ विज्ञान : अर्थ ज्ञान, महत्व, शब्दार्थ संबंध, अर्थ परिवर्तन की दिशाएं और कारण।

इकाई-5 : विश्व की भाषाओं का वर्गीकरण– (i) आकृतिमूलक–रूपात्मक (ii) पारिवारिक

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान–शैली विज्ञान

सहायक ग्रंथ:

1. भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
2. भारतीय भाषा विज्ञान की भूमिका – भोलानाथ तिवारी
3. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
4. अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन –डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
5. भारतीय भाषा विज्ञान – पं. किशोरीदास वाजपेयी
6. भाषा विज्ञान की भूमिका– डॉ0 देवेन्द्रनाथ शर्मा
7. आधुनिक भाषा विज्ञान की भूमिका – डॉ. मोतीलाल गुप्त
8. भाषा विज्ञान – बाबू श्यामसुन्दरदास
9. भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा– डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
10. अर्थ विज्ञान – मुक्तिनारायण शुक्ल
11. भाषशास्त्र की रुपरेखा–डॉ0 उदयनारायण तिवारी
12. भाषा विज्ञान की रुपरेखा – डॉ0 हरीश शर्मा
13. तुलनात्मक भाषाशास्त्र अथवा भाषा विज्ञान – डॉ. मंगलदेव शास्त्री
14. भाषा विज्ञान का रसायन – डॉ. कैलाशनाथ पांडेय
15. भाषा और भाषा विज्ञान – महावीरसरन जैन
16. भाषा-विवेचन- डॉ. भगीरथ मिश्र
17. शैली विज्ञान– डॉ भोलानाथ तिवारी शैली
18. भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा तथा लिपि – रघुवंश मणि पाठक

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			सेमेस्टर-VIII		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
चतुर्थ	**A010804T**	**पाश्चात्य साहित्यशास्त्र**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

इसके अध्ययन से साहित्य के पाश्चात्य दृष्टिकोण की समझ विकसित होगी जो तुलनात्मक ज्ञान की अभिवृद्धि में सहायक सिद्ध होगा एवं भारतीय तथा पाश्चात्य चिंतन के समन्वय की संभावना विकसित हो सकेगी, जिससे पश्चिमी देशों में हो रहे अनुसंधानों को समझने में सहायता मिलेगी।

इकाई-1 : प्लेटो: काव्य सिद्धांत, अरस्तू : अनुकृति, त्रासदी (ट्रेजेडी और उसके विविध तत्व), विरेचन सिद्धांत, प्लेटो और अरस्तू के काव्य सिद्धांत की तुलना।

इकाई-2 : लोंजाइनस : काव्य के उदात्त की अवधारणा एवं उसके विविध तत्व। क्रोचे : अभिव्यंजनावाद

इकाई-3 : वड्र्सवर्थ : काव्य भाषा का सिद्धांत। कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी

इकाई-4 : टी0 एस0 इलियट : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण । आई0 ए0 रिचड्र्स : मूल्य सिद्धांत भाषा के विविध प्रयोग, संप्रेषण सिद्धांत।

इकाई-5 : पाश्चात्य आलोचना के सिद्धांत और वाद : स्वच्छंदतावाद (रोमांटिसिज्म), शास्त्रीयतावाद, मार्क्सवादी काव्य सिद्धांत, मनोविश्लेषणवादी काव्य सिद्धांत, यथार्थवाद, बिम्बवाद, प्रतीकवाद, उत्तर आधुनिकता, विखंडन, रूपवाद, कलावाद : कला कला के लिए, मिथक, फैंटेसी, नयी समीक्षा– संरचनावाद, अस्तित्ववाद, साहित्य का समाजशास्त्र

सहायक ग्रंथ :

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रुपरेखा – डॉ0 रामचंद्र तिवारी
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ0 देवेंद्र नाथ शर्मा
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत– डॉ0 जगदीश प्रसाद मिश्र
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र परंपरा – डॉ0 नगेंद्र
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – राम पूजन तिवारी
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ0 भागीरथ मिश्र
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास – डॉ0 तारक नाथ बाली
8. पाश्चात्य काव्य चिंतन – करुणा शंकर उपाध्याय
9. अरस्तू का काव्यशास्त्र – डॉ0 नगेंद्र
10. काव्य चिंतन की पश्चिमी परंपरा – डॉ0 निर्मला जैन
11. अस्तित्ववाद कीर्केगार्द से कामू तक– योगेंद्र शाही
12. उत्तर आधुनिकतावाद : स्वरूप और आयाम – बैजनाथ सिंघल
13. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ0 योगेंद्र प्रताप सिंह

14. नई समीक्षा के प्रतिमान – संपा0 डॉ0 निर्मला जैन
15. प्लेटो के काव्य सिद्धांत– डॉ0 निर्मला जैन
16. टी0 एस0 इलियट की आलोचना दृष्टि – डॉ0 कृष्णदत्त शर्मा
17. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ0 अर्चना श्रीवास्तव
18. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ0 अमरनाथ
19. हिंदी आलोचना के बीजशब्द – डॉ0 बच्चन सिंह

एम0ए0–प्रथम वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-IX**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
प्रथम	**A010901T (A)**	**छायावादोत्तर काव्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

कविता का जन्म सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के बीच होता है। युगीनपरिस्थितियां कविता के रूप और अर्थ का गठन करती हैं।इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से छात्र-छात्राएं परिस्थिति के सापेक्ष कविता की मनोभूमि में आए बदलाव को समझ सकेंगे।

इकाई-1 : प्रगतिवाद : पृष्ठभूमि, विशेषताएँ, कवि।

प्रयोगवाद : पृष्ठभूमि, विशेषताएँ, कवि।

नयी कविता : पृष्ठभूमि, विशेषताएँ, कवि।

इकाई-2 : नागार्जुन : जीवनवृत्त, कृतियाँ, काव्यगत वैशिष्ट्य, व्यंग्य, जनकवि

4 कविताएँ– कालिदास, बादल को घिरते देखा है, शासन की बन्दूक, अकाल और उसके बाद

इकाई-3 : केदारनाथ अग्रवाल : जीवनवृत्त, कृतियाँ, काव्यगत वैशिष्ट्य।

2 कविताएँ – चन्द्रगहना से लौटती बेर, जो शिलाएँ तोड़ते हैं

त्रिलोचन शास्त्री : जीवनवृत्त, कृतित्व, किसान कवि, काव्यगत विशेषताएँ।

2 कविताएँ – उस जनपद का कवि हूँ, परिचय की गाँठ

इकाई-4 : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : जीवनवृत्त, रचनाएँ, काव्यगत विशेषताएँ, व्यष्टि व समष्टि चेतना, तारसप्तक और अज्ञेय।

2 कविताएँ – कलगी बाजरे की, असाध्यवीणा

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' : जीवन परिचय, रचनाएँ, काव्यगत वैशिष्ट्य, फैंटेसी।

2 कविताएँ– भूल गलती, अँधेरे में (एक खण्ड)

इकाई-5 : शमशेर बहादुर सिंह : जीवनवृत्त, रचनाएँ, काव्यगत वैशिष्ट्य।

2 कविताएँ – उषा, एक पीली शाम

भवानी प्रसाद मिश्र : जीवनवृत्त, रचनाएँ, काव्यगत वैशिष्ट्य।

2 कविताएँ– सतपुड़ा के जंगल, गीत-फरोश

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'छायावादोत्तर काव्य'

सम्पादक :

1. **प्रो. पुष्पा सिंह, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, सहकारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मिहरावां, जौनपुर**
2. **प्रो. अखिलेश कुमार शर्मा 'शास्त्री', आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. छायावादोत्तर हिंदी कविता– रामदरस मिश्र
2. छायावादोत्तर काव्य – डॉ0 सिद्धेश्वर प्रसाद
3. छायावादोत्तर हिंदी कविता का दार्शनिक और वैचारिक अनुशीलन– हेमन्त राज उपाध्याय
4. छायावादोत्तर प्रतिनिधि कवि और उनकी कविताएँ– सं. डॉ0 शम्भुनाथ त्रिपाठी

अथवा

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-IX**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
प्रथम	**A010901T (B)**	**राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्यधारा**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

राष्ट्रीय काव्यधारा के समस्त कवियों ने अपने काव्य में देशप्रेम व स्वतंत्रता की उत्कट भावना की अभिव्यक्ति की है। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक भावना का विकास हो सकेगा, जिससे छात्र छात्राओं में देश प्रेम व मानवता के समुचित गुण में अभिवृद्धि हो सकेगी।

इकाई-1 : हिंदी काव्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा, राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की विशेषताएँ।

इकाई-2 : माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, एक भारतीय आत्मा, साम्राज्यवाद के प्रति विद्रोही चेतना, काव्यगत विशेषताएँ।

5 कविताएँ– प्यारे भारत देश, कैदी और कोकिला, अमर राष्ट्र, पुष्प की अभिलाषा, जवानी

इकाई-3 : सुभद्राकुमारी चौहान : जीवन-परिचय, रचनाएँ, राष्ट्रीय चेतना, काव्यगत विशेषताएँ।

5 कविताएँ– जलियाँवाला बाग में वसन्त, झाँसी की रानी, झाँसी की रानी की समाधि पर, वीरों का कैसा हो वसन्त, स्वदेश के प्रति

इकाई-4 : रामधारी सिंह दिनकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, राष्टीय चेतना, युगबोध, पौरुष के कवि, काव्यगत विशेषताएँ।

5 कविताएँ (हिमालय, कलम आज उनकी जय बोल, सच्चा भारत, प्रभाती, कुरुक्षेत्र– षष्ठ सर्ग का काव्यांश)

इकाई-5 : श्यामनारायण पांडेय : जीवनवृत्त, कृतियाँ, राष्ट्र-जागरण, साक्षात् वीररसावतार, काव्यगत विशेषताएँ।

'हल्दीघाटी' (काव्यांश), 'परशुराम' (काव्यांश)

अनुमोदित ग्रंथ : 'राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्यधारा'

सम्पादक :

1. **प्रो. सुषमा सिंह, आचार्य, हिंदी विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर**
2. **प्रो. धीरेंद्र कुमार पटेल, आचार्य, हिंदी विभाग, सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदलापुर, जौनपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. राष्ट्रीय साहित्य और अन्य निबंध– आचार्य दुलारे बाजपेयी
2. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना– डॉ0 सुधाकर, शंकर कलावडे
3. राष्ट्रीय काव्यधारा– संपा0 डॉ0 कन्हैया सिंह
4. आधुनिक हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा एवं सामाजिक सांस्कृतिक संगठन– डॉ0 अमरनाथ दुबे
5. माखनलाल चतुर्वेदी : काव्य एवं दर्शन– डॉ. दिनेशचन्द्र वर्मा
6. सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना– डॉ0 संजय सिंह
7. सुभद्रा कुमारी चौहान– डॉ0 प्रतीक मिश्र (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान)
8. दिनकर के काव्य में क्रांतिमंत चेतना– निधि भार्गव
9. राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्यकला–डॉ0 शेखर जैन
10. दिनकर एवं माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय चेतना का तुलनात्मक अध्ययन– रेखा श्रीवास्तव
11. महाकवि श्याम नारायण पांडेय– डॉ0 विजयानंद

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-IX**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
द्वितीय	**A010902T (A)**	**लोकसाहित्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

भारत कृषि एवं ऋषि प्रधान देश रहा है। किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान उसके अकृत्रिम लोक जीवन व साहित्य में निहित होती है। लोक साहित्य की समृद्धि बेहतरीन शिष्ट साहित्य को जन्म देती है। इसके अध्ययन से छात्रों को अपनी बोली, भाषा, रीति-रिवाज, संस्कार, खानपान, पर्व-त्योहार का समुचित ज्ञान हो सकेगा।

इकाई-1 : लोक, लोकवार्ता, लोकसंस्कृति की अवधारणा, लोकसाहित्य की परिभाषा व विशेषताएँ

लोक साहित्य के प्रमुख संग्रहकर्ता

लोकसाहित्य की अध्ययन-प्रक्रिया एवं उसके संकलन सम्बन्धी कठिनाइयाँ

इकाई-2 : लोकसाहित्य के विविध रूप

लोकगीत : परिभाषा, प्रकार, विशेषताएँ

लोकगाथा : परिभाषा, प्रकार, विशेषताएँ

इकाई-3 : लोककथा : परिभाषा, प्राचीनता, परम्परा, स्रोत, विशेषताएँ।

लोककथा और कहानी विधा में अंतर, लोककथा और लोकगाथा में अंतर, लोककथा सम्बन्धी कुछ पारिभाषिक शब्द, लोककथा में 'अभिप्राय' का स्थान।

लोकनाट्य : परिभाषा, उत्पत्ति, विकास और परम्परा, विशेषताएँ।

इकाई-4 : लोक-साहित्य के गौण रूप : लोक सुभाषित– लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियाँ, पालने के गीत, बाल-गीत, खेल गीत।

लोकोक्ति और मुहावरा में अंतर।

इकाई-5 : लोकसाहित्य में राष्ट्रीय एवं स्वाधीन चेतना।

लोकसाहित्य का राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्त्व।

सहायक ग्रंथ :

1. लोक साहित्य की रूपरेखा – डॉ0 सत्यनारायण दुबे 'शरतेन्दु'
2. हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास (भाग-16) - सम्पा0 कृष्णदेव उपाध्याय एवं राहुल सांकृत्यायन,
3. लोकसाहित्य विज्ञान – डॉ0 सत्येंद्र
4. लोकसाहित्य विमर्श - डॉ0 श्याम परमार
5. भारतीय लोकसाहित्य – डॉ0 श्याम परमार
6. लोकसाहित्य की भूमिका – डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय
7. भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन - डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय
8. लोकसाहित्य : सिद्धांत और प्रयोग – श्रीराम शर्मा
9. लोक साहित्य के प्रतिमान – सम्पा0 कुंदनलाल उप्रेती
10. लोकसाहित्य और संस्कृति– दिनेश्वर प्रसाद
11. कविता कौमुदी, भाग-5 – पं0 रामनरेश त्रिपाठी
12. ग्राम साहित्य, भाग-1,2,3 – पं0 रामनरेश त्रिपाठी
13. बेला फूले आधी रात – डॉ. देवेंद्र सत्यार्थी
14. धरती गाती है– डॉ. देवेंद्र सत्यार्थी
15. अवधी लोकगीत विरासत – डॉ0 विद्या बिंदु सिंह

16. लोक साहित्य के विविध आयाम – डॉ0 परवीन निज़ाम अंसारी
17. लोकगीतों के संदर्भ और आयाम – डॉ0 शांति जैन
18. लोकसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना – डॉ0 शांति जैन
19. लोकगीतों में क्रांतिकारी चेतना – विश्वामित्र उपाध्याय
20. लोकगीतों और गीतों में 1857 – सम्पा0 मैनेजर पाण्डेय

अथवा

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-IX**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
द्वितीय	**A010902T (B)**	**भोजपुरी साहित्य**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

भोजपुरी अंचल का संस्कृतिक बोध कराने, मातृभूमि के प्रति भोजपुरी-जन के उत्कट ममत्व को दर्शाने एवं उसके सामाजिक उत्कर्ष-अपकर्ष, हर्ष-विषाद, घृणा-जुगुप्सा, प्रेम, चैतन्य के ताने-बाने की बारीक समझ को विकसित करने के उद्देश्य से इस प्रश्नपत्र को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

इकाई-1 : भोजपुरी भाषा : उद्भव, नामकरण, क्षेत्र, विशेषताएँ।

भोजपुरी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास।

इकाई-2 : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

निर्धारित कवि– गोरखनाथ, कबीरदास, लछिमी सखी

(दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह के 'भोजपुरी के कवि और काव्य' ग्रंथ से चयनित काव्यांश की व्याख्या)

इकाई-3 : आधुनिक काव्य

निर्धारित कवि– बाबू रघुवीर नारायण – बटोहिया, हीरा डोम – अछूत के शिकायत, हरेंद्र देव नारायण– कुँअर सिंह (कुछ अंश), चंद्रशेखर मिश्र – द्रौपदी (कुछ अंश), रामजियावनदास 'बावला' – दो कविताएँ, भोलानाथ गहमरी – दो गीत अनन्तदेव पांडेय 'अनंत'– गँउओ गाँव बुझाते नइखे, डॉ. मुनि देवेंद्र सिंह – दो कविताएँ

इकाई-4 : भोजपुरी नाटक एवं कथा साहित्य

नाटक : गबरघिचोर (भिखारी ठाकुर)/(अथवा) मेहरारुन के दुरदसा (महापंडित राहुल सांकृत्यायन)

कहानी : किसान भगवान – दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती, मछरी – रामेश्वर सिंह काश्यप

उपन्यास – बिंदिया (रामनाथ पांडेय)/(अथवा) अमंगलहारी (डॉ0 विवेकीराय)

इकाई-5 : भोजपुरी विचार साहित्य

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, द्वितीय अधिवेशन (दिसम्बर, 1947) गोपालगंज के सभापति महापंडित राहुल सांकृत्यायन का भाषण

पाठ्यग्रन्थ : **'भोजपुरी साहित्य'**

सम्पादक :

1. **प्रो. अखिलेश कुमार शर्मा 'शास्त्री', आचार्य, हिंदी विभाग, हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जमानियां, गाजीपुर**
2. **श्री सुरेश कुमार प्रजापति, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, स्वामी सहजानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. भोजपुरी साहित्य का इतिहास – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
2. भोजपुरी साहित्य के इतिहास – डॉ. अर्जुन तिवारी
3. भोजपुरी भाषा और साहित्य– डॉ. उदयनारायण तिवारी
4. भोजपुरी के कवि और काव्य – दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह
5. भिखारी ठाकुर रचनावली – सम्पा.- डॉ. नागेंद्र प्रसाद सिंह, मिथिलेश कुमारी मिश्र (बिहार राष्ट्रभाषा प
6. तीन नाटक – राहुल सांकृत्यायन
7. पुरइनपात – संपा. डॉ. अरुणेश नीरन, डॉ. चितरंजन मिश्र (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
8. भोजपुरी काव्य चयनिका – सम्पा. डॉ. अल्ताफ अहमद, डॉ. परवीन निज़ाम अंसारी (विश्विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
9. भोजपुरियत के थाती– डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी
10. कुँअर सिंह – हरेंद्र देव नारायण
11. द्रौपदी –चंद्रशेखर मिश्र
12. बयार पुरवइया – भोलानाथ गहमरी
13. अनन्तदेव पांडेय 'अनंत'– गँउओ गाँव बुझाते नइखे
14. डॉ. मुनि देवेंद्र सिंह – दो कविताएँ
15. Bhojpurisahityangan.com

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-IX**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
तृतीय	**A010903T**	**हिंदी साहित्य का इतिहास**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

साहित्य और समाज के गतिशील संबंध को पहचानने के लिए साहित्य के इतिहास की आवश्यकता होती है। छात्रों को इसके अध्ययन से समाज की विभिन्न गतिविधियों,प्रणालियों एवं परिस्थितियों के अंतःसंबंध का ज्ञान प्राप्त होगा जो उनके लिए जीवनोपयोगी पाथेय के रूप में कार्य करेगा।

इकाई-1 : साहित्य का इतिहास दर्शन, हिंदी साहित्य इतिहास लेखन की परंपरा, आधारभूत सामग्री, साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएं।

हिंदी साहित्य का इतिहास : काल-विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण

आदि काल: नामकरण, सीमांकन, पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, रासो काव्य, जैन साहित्य, लौकिक साहित्य।

इकाई-2 : भक्तिकाल : नामकरण, सीमांकन, परिवेश एवं प्रवृत्तियाँ,भक्ति आंदोलन, भक्ति की विभिन्न धाराएं और प्रवृतियां।

इकाई-3 : रीतिकाल की परिस्थितियां, काल सीमा और नामकरण प्रवृत्तियां श्रेणियां और उनकी प्रवृतियां

इकाई-4 : आधुनिककाल: आधुनिकता, आधुनिकता के उदय की पृष्ठभूमि, नवजागरण, राष्ट्रवाद का उदय, परिस्थितियाँ।

भारतेंदु युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं एवं प्रवृत्तियां।

द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं एवं प्रवृत्तियां।

हिंदी स्वच्छंदतावादी चेतना का विकास : छायावादी काव्य, प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं एवं प्रवृत्तियां।

छायावादोत्तर काव्य की विविध प्रवृत्तियां, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नवगीत, समकालीन कविता।

इकाई-5 : हिंदी की प्रमुख गद्य विधाओं– कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी निबंध और आलोचना का विकास एवं प्रवृत्तियां।

सहायक ग्रंथ :

1. साहित्य का इतिहास दर्शन – डॉ0 नलिन विलोचन शर्मा
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
3. हिंदी काव्य धारा – महापंडित राहुल सांकृत्यायन
4. हिंदी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. हिंदी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
7. हिंदी साहित्य का इतिहास – संपादक : डॉ0 नगेंद्र व हरदयाल
8. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ0 गणपति चंद्रगुप्त
9. हिंदी साहित्य का अतीत – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
10. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी
11. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ0 बच्चन सिंह
12. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ0 बचन सिंह
13. आधुनिक हिंदी साहित्य – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
14. हिंदी साहित्य का इतिहास – रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'
15. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ0 रामकुमार वर्मा
16. हिंदी साहित्य का उद्भव काल – डॉ0 वासुदेव सिंह
17. आधुनिक हिंदी साहित्य की भूमिका – डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
18. साहित्य और इतिहास दृष्टि – डॉ0 मैनेजर पांडे
19. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण – डॉ0 रामविलास शर्मा
20. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – डॉ0 रामविलास शर्मा

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			सेमेस्टर-IX		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
चतुर्थ	**A010904T**	**प्रयोजनमूलक हिंदी एवं शोध-प्रविधि**	**5**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

प्रयोजनमूलक हिंदी की अपनी विशेष प्रयोजनपरक तकनीकी शब्दावली तथा पदावली होती है, जो सरकारी कार्यालयों तथा कंप्यूटर सहित ज्ञान की विविध शाखाओं में प्रयुक्त होती है। इसके अध्ययन से छात्र इस विशेष लेखन विधा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा शोध प्रविधि के अंतर्गत शोध की सैद्धांतिकी और उसके व्यवहारिक उपयोग की बेहतर जानकारी कर उसका दैनिक जीवन में उपयोग कर सकेंगे।

इकाई-1 : प्रयोजनमूलक हिंदी – अभिप्राय एवं महत्त्व, व्यावहारिक हिंदी–पत्रलेखन, अच्छे पत्र की विशेषताएँ, पत्राचार के प्रकार–सामाजिक पत्र, व्यावसायिक पत्र, प्रशासनिक पत्र।

पत्राचार के विविध रूप–मूलपत्र, अनुस्मारक, अर्द्ध सरकारी पत्र, प्राप्ति सूचना (पावती), अधिसूचना, कार्यालय आदेश, पृष्ठांकन, अंतर्विभागीय टिप्पणी या टिप्पणी लेखन, सरकारी पत्र, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, विज्ञापन, निविदा, संकल्प, प्रेस-विज्ञप्ति।

इकाई-2 : शोध प्रविधि : परिचय। शोध : अभिप्राय, स्वरूप एवं विशेषताएँ

इकाई-3 : शोध : क्षेत्र एवं प्रकार । साहित्यिक शोध की विशेषताएँ

इकाई-4 : शोध : विषय चयन, तथ्य विश्लेषण एवं निष्कर्ष

इकाई-5 : शोध सम्बन्धी समस्याएँ, शोधार्थी के गुण, हिंदी में शोध की दशा और दिशा

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'प्रयोजनमूलक हिंदी एवं शोध-प्रविधि'

सम्पादक :

1. **प्रो. विनय कुमार दूबे, आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाज़ीपुर**
2. **डॉ. गंगेश दीक्षित, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी– दिनेश प्रसाद सिंह
2. प्रयोजनमूलक हिंदी– डॉ. विनोद गोदरे
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका– कैलाशनाथ पांडेय

4. प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रक्रिया और स्वरुप– कैलाश चन्द्र भाटिया
5. भाषा विज्ञान, हिंदी भाषा, लिपि एवं हिंदी साहित्य का इतिहास तथा प्रयोजनमूलक हिंदी– डॉ0 सत्येंद्र सिंह, डॉ0 ऋचा सिंह
6. शोध प्रविधि– डॉ0 विनय मोहन शर्मा
7. अनुसंधान की प्रक्रिया– सम्पा. (डॉ0) सावित्री सिन्हा (डॉ0) विजयेंद्र स्नातक
8. शोध : स्वरुप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि– डॉ0 बैजनाथ सिंघल
9. हिंदी शोध तंत्र की रुपरेखा– डॉ0 मनमोहन सहगल
10. शोध प्रविधि : अद्यतन दृष्टि– डॉ. गंगेश दीक्षित
11. हिंदी अनुसंधान– विजयपाल सिंह
12. शोध क्या क्यों और कैसे?– महेंद्र राजा जैन
13. हिंदी के स्वीकृत शोध प्रबंध– डॉ0 उदयभानु सिंह

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-X**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
प्रथम	**A011001T (A)**	**समकालीन काव्य**	**4**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

समकालीन कविता की वास्तविक चुनौती अमानवीयता के खिलाफ खड़े होने में नहीं वरन उसकी पहचान कराने की है।इस प्रश्न पत्र में विद्यार्थी समकालीन हिंदी कविता का अध्ययन करेंगे,इससे 1960 के बाद ऐतिहासिक मोहभंग के व्यापक अनुभव के फलस्वरूप कविता की भूमिका में आए बदलाव का रेखांकन हो सकेगा, जिससे उन्हें बेहतर सामाजिक समझ प्राप्त हो सकेगी।

इकाई-1 : समकालीन कविता : पृष्ठभूमि, विशेषताएँ, कवि।

इकाई-2 : रघुवीर सहाय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, काव्यगत विशेषताएँ।

4 कविताएँ– 'हँसो-हँसो जल्दी हँसो', 'पढ़िए गीता', 'रामदास', 'किले में औरत', 'पानी-पानी, बच्चा-बच्चा'

इकाई-3 : सुदामा पांडेय 'धूमिल' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, काव्यगत विशेषताएँ, जनचेतना, विद्रोही स्वर

4 कविताएँ– 'नक्सलबाड़ी', 'अकाल दर्शन', 'रोटी और संसद', 'कविता'

इकाई-4 : केदारनाथ सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, काव्यगत विशेषताएँ।

4 कविताएँ– मातृभाषा, अकाल में सारस, माँझी का पुल, बनारस

इकाई-5 : लीलाधर जगूड़ी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, काव्यगत विशेषताएँ।

4 कविताएँ– मेरा ईश्वर, भाषा में लोग, अपने से बाहर, बलदेव खटिक

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'समकालीन काव्य'

सम्पादक :

1. **डॉ. राजदेव दूबे, सह-आचार्य, हिंदी विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर**
2. **डॉ. ऊषा भारती, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. समकालीन काव्य-यात्रा– नन्दकिशोर नवल
2. समकालीन हिंदी कविता– विश्वनाथप्रसाद तिवारी
3. समकालीन कविता के आयाम– सं. पी0 रवि
4. समकालीन हिंदी कविता : प्रवित्तियाँ एवं अभिव्यक्तियाँ – डॉ. अवनीश अस्थाना (गोयल पब्लिकेशन, दिल्ली)
5. समकालीन हिंदी कविता : नया परिप्रेक्ष्य – डॉ. अवनीश अस्थाना (अंकित पब्लिकेशन, दिल्ली)

अथवा

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-X**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
प्रथम	**A011001T (B)**	**नवगीत**	**4**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

नवगीत चिंतन विधा की एक नवीन पद्धति है जो नए तरह का भावबोध देता है। युग के संदर्भ के अनुसार मानव मन के संवेग,भाव या विचार नए-नए रूप ग्रहण करते रहते हैं।नवगीत का अध्ययन इसलिए भी उपयोगी होगा क्योंकि यह अपनी उत्पन्न मनोभूमि की सोंधी गंध को अपने में समेटे हुए हैं, जिसका सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव शिक्षार्थियों पर पड़ेगा।

इकाई-1 : नवगीत : अर्थ, परिभाषा, तत्व, विशेषताएं, गीत और नवगीत में अंतर, नवगीत के विविध आयाम।

इकाई-2 : शंभुनाथ सिंह : जीवन-वृत्त, कृतित्व, नवगीतों की भावगत एवं शिल्पगत विशेषताएँ तथा विविध भावबोध। 4 नवगीत

इकाई-3 : माहेश्वर तिवारी : जीवनी, कृतियां, नवगीत का संवेदनात्मक और शिल्पगत पक्ष। 4 नवगीत

इकाई-4 : श्रीकृष्ण तिवारी : जीवन-परिचय, रचनाएं, नवगीत का काव्यगत वैशिष्ट्य– भाव एवं शिल्प। 4 नवगीत

इकाई-5 : डॉ. उमाशंकर तिवारी : व्यक्तित्व, कृतित्व, नवगीत में भावगत एवं शिल्पगत विशेषताएँ। 4 नवगीत

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'नवगीत मंजरी'

सम्पादक :

1. **प्रो. सुधा सिंह, आचार्य, हिंदी विभाग, राजा श्रीकृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर**
2. **डॉ. संजय कुमार सुमन, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. नवगीत : नए संदर्भ, नई दिशाएं – अनिल कुमार पांडेय
2. नवगीत दशक – संपा. शंभूनाथ सिंह
3. नवगीत : संवेदना और शिल्प – डॉ. सत्येंद्र शर्मा
4. नई सदी के नवगीत का मूल्यांकन – संपा. ओम प्रकाश सिंह
5. नवगीत के विविध आयाम – संपा. मधुकर अष्टाना
6. हिंदी लोकगीत में बिम्ब और प्रतीक – डॉ मधु दीक्षित
7. नवगीत की अस्मिता : कुमार रविंद्र
8. नवगीत निकष : संपा. डॉ उमाशंकर तिवारी, डॉ. जगदीश सिंह

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-X**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
द्वितीय	**A011002T (A)**	**हिंदी भाषा एवं देवनागरी लिपि**	**4**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

हिंदी भाषा राष्ट्र का गौरव और हमारी सांस्कृतिक एकता–अखंडता की नींव है। इस प्रश्नपत्र के द्वारा छात्र हिंदी की उत्पत्ति, विकास एवं इसकी विभिन्न सरस बोलियों का परिचय प्राप्त करते हुए इसकी अत्यंत वैज्ञानिक देवनागरी लिपि के गुण-दोषों का निदर्शन कर सकेंगे तथा इसकी व्याकरणिक शुद्धता के ज्ञान से लेखन क्षमता को परिमार्जित करते हुए इस भाषा के प्रति वैज्ञानिक समझ विकसित कर सकेंगे।

इकाई-1 : भारतीय भाषा परिवार, प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय आर्यभाषा।

इकाई-2 : हिंदी– हिंदी शब्द की व्युत्पत्ति, अभिप्राय एवं प्रयोग, हिंदी क्षेत्र का विस्तार, हिंदी भाषा का उद्भव और विकास।

इकाई-3 : हिंदी की प्रमुख बोलियाँ– अवधी, भोजपुरी, खड़ीबोली, ब्रज का सामान्य परिचय एवं व्याकरणगत विशेषताएँ। हिंदी के विविध रुप– संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रुप में हिंदी।

हिंदी की संवैधानिक स्थिति। इंटरनेट और हिंदी भाषा।

इकाई-4 : हिंदी शब्द रचना– उपसर्ग, प्रत्यय, समास, रुप-रचना, लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया रुप। हिंदी वाक्य रचना, पदक्रम और अन्विति।

इकाई-5 : देवनागरी लिपि : उद्भव और विकास, गुण, दोष, सुधार के प्रयास, मानकीकरण।

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी भाषा – डॉ0 हरदेव बाहरी
2. भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा तथा लिपि – रघुवंश मणि पाठक
3. राजभाषा हिंदी – प्रकाशन विभाग
4. हिंदी भाषा – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
5. हिंदी भाषा की संरचना – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
6. हिंदी भाषा – डॉ0 कैलाश चंद्र भाटिया
7. हिंदी शब्दानुशासन – आचार्य किशोरी दास बाजपेयी
8. हिंदी व्याकरण – कामता प्रसाद गुरु
9. हिंदी भाषा और नागरी लिपि – लक्ष्मीकांत वर्मा
10. नागरी लिपि और उसकी समस्याएं – डॉ0 नरेश मिश्र
11. राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएं और समाधान – आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
12. हिंदी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास – डॉ0 सत्यनारायण त्रिपाठी
13. हिंदी भाषा की लिपि का इतिहास एवं प्रयोग : गोपाल स्वरुप पाठक
14. हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

अथवा

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-X**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
द्वितीय	**A011002T (B)**	**सिनेमा और हिंदी साहित्य**	**4**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

सिनेमा राष्ट्रीय एकता तथा भावनात्मक सहकार की अभिवृद्धि में सहायक होते हैं। विभिन्न देशों की फिल्में हमें विश्व मानव की समस्याओं से परिचित कराती हैं जिससे परिचित होकर हम शांति एवं समृद्धि का मार्ग ढूंढ सकते हैं। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के माध्यम से हम कला, अभिनय, संगीत, विज्ञान आदि की प्रभावी शिक्षा शिक्षार्थी को दे पाएंगे।

इकाई-1 : सिनेमा का इतिहास, सिनेमा का स्वरूप, विकास, सिनेमा के विभिन्न रूप और प्रकार

इकाई-2 : समाज, संस्कृति और राजनीति से सिनेमा का संबंध, शिक्षा मनोरंजन और सिनेमा, जनमाध्यम के रूप में सिनेमा की वस्तु, भाषा और कला का महत्व

इकाई-3 : भारत में सिनेमा का आरंभ, हिंदी सिनेमा का आरंभ और विकास, हिंदी सिनेमा : प्रयोग, प्रवृतियां और धाराएं

इकाई-4 : हिंदी साहित्य और सिनेमा, हिंदी की साहित्यिक कृतियाँ और उनका सिनेमा में रुपांतरण, चित्रलेखा, मारे गए गुलफाम (तीसरी कसम) शतरंज के खिलाड़ी, सारा आकाश, यही सच है (रजनीगंधा) और काली आंधी (आंधी) के विशेष संदर्भ में साहित्य और सिनेमा की संवेदना एवं रचना का अंतर और संबंध

इकाई-5 : सिनेमा और हिंदी साहित्य का समकालीन परिदृश्य, समस्याएं एवं संभावनाएं

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'सिनेमा और हिंदी साहित्य'

सम्पादक :

1. **डॉ. प्रद्युम्न सिंह, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, हंडिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हंडिया, प्रयागराज**
2. **डॉ. रवींद्र कुमार सिंह, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. फिल्म क्षेत्रे, रंग क्षेत्रे – अमृतलाल नागर
2. भारतीय सिनेमा का सफ़रनामा – सम्पा. डॉ. पुनीत बिसरिया, डॉ. राजनारायण शुक्ल
3. हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र – जबरीमल पारख
4. लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ – जबरीमल पारख
5. पश्चिम और सिनेमा – दिनेश श्रीनेत
6. सिनेमा के सौ बरस – (सम्पा.) मृत्युंजय
7. हिंदी सिनेमा का सच – (सम्पा.) शंभुनाथ
8. सिनेमा : कल, आज, कल – विनोद भारद्वाज
9. चलचित्र : कल और आज – सत्यजीत राय

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-X**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
तृतीय	**A011003T (A)**	**अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य**	**4**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

सृष्टि की उत्पत्ति से आज तक मानव जीवन की सुविधाओं की अभिवृद्धि में उत्तरोत्तर वृद्धि करता आया है। लेकिन उसका एक बड़ा तबका विकास की एस दौड़ में पीछे छूट गया है।इस विमर्श द्वारा हम छात्र-छात्राओं में सहकार की भावना का विकास कर समाज के वंचितों के दु:ख दर्द की समझ एवं उनके जीवन स्तर को ऊंचा उठाने की दिशा में क्रियाशील करने हेतु प्रेरित कर सकेंगे।

इकाई-1 : अस्मिता मूलक विमर्श : अभिप्राय एवं भेद।

दलित विमर्श : अवधारणा, स्वरूप, आंदोलन, वैचारिक पृष्ठभूमि– ज्योतिबा फुले एवं अंबेडकर दर्शन।

स्त्री विमर्श : अवधारणा, स्वरूप, वैचारिकी, मुक्ति आंदोलन और प्रतिरोध के स्वर।

आदिवासी विमर्श : अवधारणा, जल, जंगल एवं जमीन के लिए आदिवासी आंदोलन।

हिंदी साहित्य में अस्मितामूलक विमर्श का उद्भव और विकास : संक्षिप्त परिचय

इकाई-2 : दलित साहित्य

कविता : दलित कहाँ तक पड़े रहेंगे – अछूतानन्द हरिहर, कितनी व्यथा – नगीना सिंह

कहानी: सलाम – ओमप्रकाश बाल्मीकि

आत्मकथा: मुर्दहिया (तुलसीदास)– कुछ अंश

इकाई-3 : स्त्री साहित्य

कविता : कीर्ति चौधरी – सीमारेखा, सात भाइयों के बीच चंपा– कात्यायनी

कहानी : नासिरा शर्मा – खुदा की वापसी

आत्मकथा : अन्या से अनन्या (प्रभा खेतान)– चयनित अंश

इकाई-4 : आदिवासी साहित्य

कविता : तुम्हारे एहसान लेने से पहले सोचना पड़ेगा– निर्मला पुतुल, ससन दिरी– अनुज लुगुन

उपन्यास : धूणी तपे तीर – हरिराम मीणा (कुछ अंश, पृ. 158–167)

इकाई-5 : अन्य साहित्य –गुलामगिरी (ज्योतिबा फुले)– कुछ अंश, श्रृंखला की कड़ियाँ (महादेवी वर्मा)– उद्धृत अंश, 'धरती आबा' (बिरसामुण्डा के जीवन पर केंद्रित नाटक)– हृषिकेश सुलभ (राजकमल प्रकाशन)

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य'

सम्पादक :

1. **डॉ. संगीता मौर्या, सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**
2. **डा. निरंजन कुमार यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. अस्मिता मूलक विमर्श और हिंदी साहित्य– सम्पा0 डॉ0 हेमंत कुकरेती, डॉ0 सुषमा प्रियदर्शनी, डॉ0 आशा रानी, स्वाति परमार
2. अस्मिता मूलक साहित्य का सौंदर्यशास्त्र– सम्पा0 कर्मानन्द आर्य
3. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र– ओमप्रकाश वाल्मीकि
4. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र– शरण कुमार लिंबाले
5. दलित आंदोलन का इतिहास– मोहनदास नैमिशराय
6. उपनिवेश में स्त्री– प्रभा खेतान
7. स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा– सुधा सिंह

8. औरत होने की सजा– अरविंद जैन
9. स्त्री विमर्श : विविध पहलू– सम्पा0 कल्पना वर्मा
10. स्त्री विमर्श की उत्तर गाथा– अनामिका
11. आदिवासी अस्मिता का संकट– रमणिका गुप्ता
12. हिंदी साहित्य में आदिवासी हस्तक्षेप– गौतम भाईदास कुँवर
13. आदिवासी विमर्श– डॉ. रमेश चन्द्र मीणा

अथवा

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-X**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
तृतीय	**A011003T (B)**	**हिंदी पत्रकारिता**	**4**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

पत्र का काम या व्यवसाय ही पत्रकारिता है। पत्रकारिता का सीधा सम्बन्ध सामाज से है। यह जनता को सचेत एवं शिक्षित करते हुए सुरुचिपूर्ण मनोरंजन व सुमार्ग प्रदान करती है। इसका मूल उद्देश्य सूचना प्रदान करना है। शिक्षार्थी इसके अध्ययन से पत्रकारिता के अर्थ, स्वरूप एवं पत्रकार के गुण, योग्यता तथा दायित्व को समझ सकेंगे जिस पर बेहतर पकड़ बनाकर पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना कैरियर भी बना सकेंगे।

इकाई-1 : पत्रकारिता की अवधारणा, पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार, पत्रकारिता के उद्देश्य।

पत्रकारिता के मूलतत्व , संपादन कला के सामान्य सिद्धांत , भेंटवार्ता के प्रकार तथा उनकी प्रविधि

इकाई-2 : पत्रकारिता की आधुनिक विधाएं : खोजी एवं विश्लेषणात्मक पत्रकारिता, फीचर लेखन एवं विशेषीकृत पत्रकारिता, ई-पत्रकारिता, रिपोर्टिंग और संपादन की प्रक्रिया तथा विविध आयाम , इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और हिंदी पत्रकारिता । सूचना और कानून

(i) श्रमजीवी पत्रकार कानून, (ii) प्रेस कमीशन 1 तथा 2

(iii) प्रेस स्वतंत्रता संबंधी अद्यतन कानून, (iv) प्रसार भारती

इकाई-3 : हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास। हिंदी के प्रमुख पत्र : उदंत मार्तंड, कविवचन सुधा, हिंदी प्रदीप, ब्राम्हण, सरस्वती, कर्मवीर, प्रताप, हंस, माधुरी, मतवाला

इकाई-4 : प्रमुख संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं0 युगल किशोर सुकुल, बालकृष्ण भट्ट, पं0 माधव प्रसाद मिश्र, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, गणेश शंकर विद्यार्थी, अज्ञेय, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती।

इकाई-5 : हिंदी साहित्य पत्रकारिता, हिंदी पत्रकारिता के वर्तमान संदर्भ, प्रवृतियां और समस्याएं, हिंदी पत्रकारिता के विकास की समस्याएं

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'हिंदी पत्रकारिता'

सम्पादक :

1. **श्री अमित कुमार सिंह, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**
2. **डॉ. कृष्ण प्रताप सिंह, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, खरडीहा महाविद्यालय, खरडीहा, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी पत्रकारिता विविध आयाम – डॉ0 वेद प्रताप वैदिक
2. हिंदी पत्रकारिता : आलोचनात्मक इतिहास – डॉ0 रमेश कुमार जैन
3. हिंदी पत्रकारिता – डॉ0 रमेश चंद्र त्रिपाठी
4. जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता – डॉ0 अर्जुन तिवारी
5. हिंदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास – डॉ0 अर्जुन तिवारी
6. इतिहास निर्माता पत्रकार – डॉ0 अर्जुन तिवारी
7. समाचार पत्र और संपादन कला – अंबिका प्रसाद वाजपेयी
8. पत्रकारिता के विविध संदर्भ – डॉ0 बंशीधर लाल
9. संवाद और संवाददाता – डॉ0 राजेंद्र
10. समाचार संकलन और संपादन – डॉ0 रमेश जैन
11. पत्रकारिता, जनसंचार सिद्धांत एवं व्यवहार – संपा0 डॉ0 बलदेव राज गुप्ता तथा पुरुषोत्तम
12. लोक संपर्क – डॉ0 राजेंद्र
13. समकालीन पत्रकारिता – संपा0 राजकिशोर
14. जनसंचार विविध आयाम – बृजमोहन गुप्ता
15. हिंदी पत्रकारिता– डॉ0 कृष्ण बिहारी मिश्र
16. हिंदी पत्रकारिता के युग निर्माता– डॉ0 लक्ष्मी शंकर व्यास
17. पत्रकारिता के विविध रूप – डॉ0 रामचंद्र तिवारी
18. राष्ट्रीय नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता – डॉ0 मीरा रानी बल
19. प्रेस विधि – डॉ0 नंदकिशोर त्रिखा
20. हिंदी पत्रकारिता – डॉ0 धीरेंद्र नाथ सिंह
21. भारत में प्रेस कानून और पत्रकारिता – गंगा प्रसाद ठाकुर
22. पत्रकारिता : इतिहास और प्रश्न– डॉ0 कृष्ण बिहारी मिश्र

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-X**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**
चतुर्थ	**A011004T(A)**	**साहित्यकार का विशेष अध्ययन (भारतेंदु हरिश्चंद्र)**	**4**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हिंदुस्तान की संगठित राष्ट्रभावना का जयनाद प्रारंभ किया था। वे निज-भाषा के पक्षधर और निज-संस्कृति के प्रचारक थे। उन्होंने हिंदी में गद्य की अनेक विधाओं का प्रवर्तन किया। उन्होंने अपने नाटकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा भाषणों द्वारा तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों, विसंगतियों और दुर्व्यवस्थाओं के प्रति देशवासियों को जाग्रत किया। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से शिक्षार्थियों में भारतेंदु के महत्त्व को समझने तथा उनसे प्रेरणा लेने में मदद मिलेगी, साथ ही राष्ट्रीयता की भावना का विकास एवं सांस्कृतिक समन्वय का भाव विकसित हो सकेगा।

इकाई-1 : भारतेंदु हरिश्चंद्र : व्यक्तित्व एवं रचनाओं का परिचय, हिंदी नवजागरण और भारतेंदु हरिश्चंद्र।

इकाई-2 : काव्य : भक्तिपरक 10 पद (चयनित), मातृभाषा प्रेम पर दोहे

इकाई-3 : मौलिक नाटक : अंधेरनगरी, भारत दुर्दशा (समीक्षात्मक एवं व्याख्यात्मक)

इकाई-4 : अनूदित नाटक : पाखंड विडम्बन, भारत जननी (समीक्षात्मक एवं व्याख्यात्मक)

इकाई-5 : विविध गद्य

निबंध : स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन, वैष्णवता और भारतवर्ष

यात्रा साहित्य : सरयू पार की यात्रा, हरिद्वार

व्यंग्य : अंगरेज स्तोत्र

अनुमोदित पाठ्यग्रन्थ : 'भारतेंदु हरिश्चंद्र का विशेष अध्ययन'

1. **प्रो. विनय कुमार दूबे, आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाज़ीपुर**
2. **प्रो. अखिलेश कुमार शर्मा 'शास्त्री', आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. भारतेंदु समग्र – सम्पा. हेमन्त शर्मा
2. भारतेंदु संचयन – सम्पा. रामजी यादव
3. भारतेंदु ग्रंथावली– सम्पा. डॉ. मिथिलेश पांडेय
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र – ब्रजरत्नदास
5. भारतेंदु के निबंध – ब्रजरत्नदास
6. भारतेंदु के निबन्ध – सम्पा. केसरीनारायण शुक्ल
7. भारतेन्दुकालीन व्यंग परम्परा – सम्पा. ब्रजेंद्रनाथ पांडेय
8. भारतेंदु के श्रेष्ठ निबंध – सम्पा. प्रो. सत्यप्रकाश मिश्र
9. Kavitakosh.org
10. Hindwi.org

अथवा

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)			**सेमेस्टर-X**		
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्नपत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**	**कुल व्याख्यान/कालांश**

चतुर्थ	**A011004T (B)**	**साहित्यकार का विशेष अध्ययन (प्रेमचंद)**	**4**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

यह प्रश्न पत्र साहित्यकारों के विशेष अध्ययन के वैकल्पिक क्रम में प्रेमचंद के साहित्य के अनुशीलन से संबंधित है।इसके अध्ययन से स्वाधीनता आंदोलन, स्त्री जीवन,दलित समस्याओं, किसान जीवन के दुख दर्द एवं सांप्रदायिकता आदि ज्वलंत समस्याओं पर शिक्षार्थी प्रेमचंद के अनुकरणीय विचार से रूबरू हो सकेंगे।

इकाई-1 : प्रेमचंद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, प्रेमचंद का युग और समाज तथा प्रेमचंद की प्रगतिशील चेतना, प्रेमचंद साहित्य में आदर्श और यथार्थ, स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचंद।

इकाई-2 : उपन्यास : रंगभूमि, निर्मला/(अथवा) गबन, गोदान (समीक्षात्मक एवं व्याख्यात्मक)

इकाई-3 : कहानी : कफ़न, पूस की रात, ठाकुर का कुँआ, बूढ़ी काकी (आलोचना एवं व्याख्या)

इकाई-4 : नाटक : कर्बला अथवा संग्राम (समीक्षात्मक)

इकाई-5 : 'कुछ विचार' पुस्तक से उद्धृत प्रेमचंद के विचार (लेख/निबन्ध)–

साहित्य का उद्देश्य, जीवन में साहित्य का स्थान, राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी समस्याएँ

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'प्रेमचन्द का विशेष अध्ययन'

सम्पादक :

1. **डॉ. महेंद्र कुमार त्रिपाठी, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर**
2. **डॉ. राजदेव दूबे, सह-आचार्य, हिंदी विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा
2. मानसरोवर – आठ खण्ड (Hindisamay.com)
3. प्रेमचंद की वैचारिक संवेदना – योगेंद्र
4. प्रेमचंद की उपन्यास कला – जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'
5. प्रेमचंद की प्रासंगिकता – अमृतराय प्रेमचंद
6. रचना संचयन – संपा. निर्मल वर्मा, कमल किशोर गोयनका
7. प्रेमचंद घर में – शिवरानी देवी
8. कलम का सिपाही – अमृतराय

अथवा

एम0ए0–द्वितीय वर्ष (हिंदी)	**सेमेस्टर-X**

प्रश्न-पत्र	प्रश्न-पत्र कोड	प्रश्नपत्र शीर्षक	क्रेडिट	पूर्णांक	कुल व्याख्यान/कालांश
चतुर्थ	**A011004T (C)**	**साहित्यकार का विशेष अध्ययन (जयशंकर प्रसाद)**	**4**	**25+75 =100**	**75 (प्रति इकाई 15 व्याख्यान)**

प्रेम और सौंदर्य मानव जीवन की आधारभूमि है।प्रेम के अनुभूति की दिशा मानव,प्रकृति तथा ईश्वर तक प्रकीर्ण है। प्रसाद जी ने मानव, प्रकृति और ईश्वर तीनों के सौंदर्य का आकर्षक चित्र अपने साहित्य में खींचा है। इस प्रश्न पत्र के अध्ययन द्वारा शिक्षार्थी जीवन के गूढ़ दार्शनिक मतवाद को सुलभ ढंग से समझ सकेगा।

इकाई-1 : जीवनी, कृतियां, छायावादी काव्य और प्रसाद, काव्यगत विशेषताएं

इकाई-2 : संकलित काव्य (व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक) : कामायनी (दो सर्ग), आंसू (कुछ अंश), बीती विभावरी जाग री, अरुण मधुमय यह देश हमारा, महाराणा का महत्त्व

इकाई-3 : नाटक : स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी (आलोचनात्मक एवं व्याख्यात्मक)

इकाई-4 : कथा-साहित्य : उपन्यास –कंकाल (समीक्षा, अंश की व्याख्या)

कहानी – आकाशदीप, पुरस्कार, गुंडा, ममता (समीक्षात्मक)

इकाई-5 : निबंध : 'काव्य और कला तथा अन्य निबंध' से चयनित 3 निबंध (आलोचनात्मक अध्ययन)

अनुमोदित पाठ्यग्रंथ : 'जयशंकर प्रसाद का विशेष अध्ययन'

सम्पादक :

1. **डॉ. संजय चतुर्वेदी, सह-आचार्य, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजीपुर**
2. **डॉ. संगीता मौर्या, सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर**

सहायक ग्रंथ :

1. छायावाद – नामवर सिंह
2. कामायनी और छायावाद – तारकनाथ बाली
3. कामायनी के अध्ययन की समस्या – नगेन्द्र
4. प्रसाद के नाटक – सिद्धनाथ कुमार
5. प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य – लोकभारती प्रकाशन
6. कामायनी एक पुनर्विचार – गजानन माधव मुक्तिबोध
7. कामायनी का पुनर्मूल्यांकन – रामस्वरुप चतुर्वेदी
8. जयशंकर प्रसाद –नंददुलारे वाजपेयी
9. जयशंकर प्रसाद – प्रभाकर माचवे
10. जयशंकर प्रसाद – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

11. प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास
12. प्रसाद का जीवन दर्शन, कला और कृतित्व – महावीर अधिकारी
13. प्रसाद का विकासात्मक अध्ययन – किशोरी लाल गुप्त
14. प्रसाद की कला – गुलाब राय
15. जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता – प्रभाकर श्रोत्रिय
16. कामायनी भाष्य – डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना
17. प्रसाद और उनकी कामायनी – डॉ0 उषा यादव
18. प्रसाद का काव्य – प्रेम शंकर
19. प्रसाद काव्य का नया मूल्यांकन – डॉ0 योगेश्वर
20. प्रसाद की कविता – भोलानाथ तिवारी
21. जयशंकर प्रसाद : मूल्यांकन और मूल्यांकन – सम्पा. कृष्णकुमार गोस्वामी

उत्तर प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को स्नातक (शोध सहित), स्नातकोत्तर एवं पी-एच.डी.स्तर पर लागू किए जाने हेतु सुझाव :

उत्तर प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू किए जाने हेतु उच्च शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश शासन ने शासनादेश संख्या–1567/सत्तर–3–2021–16(26) /2011 टी. सी., दिनांक 13 जुलाई 2021 जारी किया था, जिसके बिंदु संख्या चार में कहा गया था कि स्नातक (शोध सहित), स्नातकोत्तर एवं पी–एच.डी. पाठ्यक्रमों/कार्यक्रमों में सी.बी.सी.एस.(Choice Based Credit System) आधारित नवीन पाठ्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2022– 23 से लागू होगा। इस संबंध में निम्न सुझाव/ योजना प्रस्तुत है :

क्षेत्र (Scope) :

- जिन संकायों के पाठ्यक्रमों/ कार्यक्रमों में किसी नियामक संस्था के नियम लागू नहीं होते जैसे कि एम.ए.,एम.एस-सी.एवं एम.काम. इत्यादि उनमें यह व्यवस्था लागू होगी।

स्नातकोत्तर में प्रवेश व निकास:

- नवीन अथवा पुरातन प्रणाली के तीन वर्षीय स्नातक उपाधि प्राप्त विद्यार्थी स्नातकोत्तर कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश लेंगे। यह वर्ष उच्च शिक्षा का चतुर्थ वर्ष कहलायेगा।
- इस वर्ष में प्रवेश विश्वविद्यालय के नियमानुसार प्रवेश परीक्षा अथवा मेरिट पर आधारित होगा। प्रवेश के लिए न्यूनतम अर्हता विश्वविद्यालय के नियमानुसार (स्नातक कला में हिंदी विषय को मुख्य विषय के रूप में पढ़ने वाले शिक्षार्थियों को प्रवेश दिया जाएगा) होगी।
- स्नातकोत्तर के प्रथम वर्ष में न्यूनतम 52 क्रेडिट अर्जित कर उत्तीर्ण करने के पश्चात यदि कोई छात्र छोड़कर जाना चाहता है तो उसे स्नातक (शोध सहित) की उपाधि दी जाएगी।स्नातकोत्तर प्रथम व द्वितीय वर्ष दोनों में न्यूनतम 52+48 क्रेडिट अर्जित करके उत्तीर्ण करने पर छात्र को उस संकाय के उस मुख्य विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्रदान की जाएगी।

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम/कार्यक्रम संरचना:

- स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की संरचना जैसे कि पेपर्स का प्रकार, उनकी संख्या व क्रेडिट इत्यादि, उपर्युक्त उल्लेखित 13 जुलाई 2021 के शासनादेश के अंतिम पृष्ठ पर एक तालिका में दी हुई है जिसे सुलभ संज्ञान/संदर्भ के लिए नीचे दिया जा रहा है–
- स्नातकोत्तर में एक ही मुख्य विषय (Major Subject) होगा।
- स्नातकोत्तर कार्यक्रम सी.बी.सी.एस.(Choice Based Credit System) एवं सेमेस्टर प्रणाली में संचालित होगा।
- मुख्य विषय के चार थ्योरी के पेपर (पांच क्रेडिट का एक एक) अथवा चार थ्योरी के व एक प्रयोगात्मक पेपर (सभी चार क्रेडिट) एक सेमेस्टर में होंगे।इस प्रकार एक सेमेस्टर में मुख्य विषय के पेपर्स के बीस क्रेडिट होंगे। एक वर्ष में 40 व दो वर्ष में 80 क्रेडिट होंगे।
- स्नातकोत्तर कार्यक्रम का पाठ्यक्रम इस प्रकार बनाया जाएगा कि उसमें अधिकाधिक ऑप्शनल पेपर्स हों,जैसे कि प्रथम सेमेस्टर में चारों थ्योरी पेपर्स अनिवार्य हो सकते हैं। द्वितीय व तृतीय सेमेस्टर में एक अथवा दो पेपर स्पेशलाइजेशन पर आधारित ऑप्शनल पेपर्स में से विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार एवं विश्वविद्यालय/महाविद्यालय में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर इन पेपर्स का चुनाव कर सकता है। चतुर्थ सेमेस्टर में अधिकाधिक अथवा सभी पेपर्स स्पेशलाइजेशन पर आधारित ऑप्शनल पेपर्स होना समुचित रहेगा।
- स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष में छात्र को केवल एक माइनर इलेक्टिव पेपर, मुख्य विषय से अलग किसी अन्य संकाय के विषय का लेना होगा यह पेपर चार या अधिक क्रेडिट का होगा।
- उपरोक्त सभी पेपर्स के पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय द्वारा अपनी पाठ्य समिति एवं विद्वत परिषद से शीघ्र ही अनुमोदित कराए जायेंगे।

स्नातकोत्तर कार्यक्रम में शोध परियोजना (Research Project) :

- उच्च शिक्षा के चतुर्थ एवं पंचम वर्ष (स्नातकोत्तर के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष)में विद्यार्थी को वृहद शोध परियोजना करनी होगी।
- विद्यार्थी को चतुर्थी एवं पंचम वर्ष में उसके द्वारा चुने गए मुख्य विषय से संबंधित शोध परियोजना करनी होगी।
- यह शोध परियोजना इंटरडिसीप्लिनरी/ मल्टीडिसीप्लिनरी भी हो सकती है।यह शोध परियोजना इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग/इंटर्नशिप/सर्वे वर्क इत्यादि के रूप में भी हो सकती है।
- शोध परियोजना एक शिक्षक सुपरवाइजर के निर्देशन में की जाएगी, यथा आवश्यक एक अन्य को को–सुपरवाइजर (सह-निर्देशक) जो किसी उद्योग/ कंपनी/ तकनीकी संस्थान/शोध संस्थान में कार्यरत होंगे जो परियोजना की आवश्यकता पर निर्भर करेगा।
- स्नातक (शोध सहित) एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी को प्रत्येक सेमेस्टर में चार क्रेडिट (चार घंटे प्रति सप्ताह) की शोध परियोजना करनी होगी।

- विद्यार्थी वर्ष के अंत में दोनों सेमेस्टर में की गई शोध परियोजना का संयुक्त प्रबंध (प्रोजेक्ट रिपोर्ट/डिजर्टेशन) (जो टंकित अथवा पठनीय हस्तलिपि में हो सकता है) जमा करेगा, जिसका मूल्यांकन वर्ष के अंत में सुपरवाइजर एवं विश्वविद्यालय द्वारा नामित वाह्य परीक्षक द्वारा संयुक्त रूप से 100 अंकों में से किया जाएगा। इस प्रकार इस परीक्षा के कुल 16 क्रेडिट होंगे अर्थात् प्रत्येक सेमेस्टर में 4 क्रेडिट की शोध परियोजना करनी होगी। वाह्य एवं आंतरिक मूल्यांकन कर्ता को विश्वविद्यालय द्वारा डिजर्टेशन के मूल्यांकन हेतु निर्धारित पारिश्रमिक देय होगा।
- यदि कोई विद्यार्थी अपनी शोध परियोजना में से कोई शोधपत्र यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के दौरान प्रकाशित करवाता है,तो उस शोध परियोजना के मूल्यांकन (पूर्णांक 100 में से) में 25 अंक तक अतिरिक्त अंक दिए जा सकते हैं। प्राप्तांक अधिकतम 100 ही होगा।
- शोध परियोजना के प्राप्तांकों पर आधारित ग्रेड अंकित होंगे तथा उन्हें सीजीपीए की गणना में भी सम्मिलित किया जायेगा।

क्रेडिट एवं क्रेडिट निर्धारण:

क्रेडिट एवं क्रेडिट निर्धारण तथा उपस्थिति आदि के नियम उपरोक्त उल्लेखित 13 जुलाई 2021 के शासनादेश के बिंदु संख्या 9 व 10 में दिए गए हैं जिनका विवरण इस प्रकार हैं:

9.1 थ्योरी के एक क्रेडिट के पेपर में एक घंटा/प्रति सप्ताह का शिक्षण कार्य होगा,अर्थात एक सेमेस्टर में 15 सप्ताह में 15 घंटे का शिक्षण करना होगा।

9.2 प्रैक्टिकल/इंटर्नशिप/फील्ड वर्क आदि के क्रेडिट के पेपर में 2 घंटे/ प्रति सप्ताह का शिक्षण कार्य होगा,अर्थात एक सेमेस्टर के 15 सप्ताह में 30 घंटे का प्रैक्टिकल/ इंटर्नशिप/फील्ड वर्क आदि करना होगा।शिक्षक के कार्यभार की गणना में थ्योरी के एक घंटे का कार्यभार प्रैक्टिकल/इंटर्नशिप/ फील्ड वर्क आदि के दो घंटे के कार्यभार के बराबर होगा।

9.3 क्रेडिट सम्बन्धित समस्त कार्य राज्य स्तरीय 'एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट' के माध्यम से किए जाएंगे,जिसके दिशानिर्देश अलग से जारी किए जाएंगे।

9.4 विद्यार्थी न्यूनतम 46 क्रेडिट अर्जित करने पर एक वर्षीय सर्टिफिकेट,न्यूनतम 92 क्रेडिट अर्जित करने पर द्विवार्षिक डिप्लोमा तथा न्यूनतम 132 क्रेडिट अर्जित करने पर 3 वर्षीय स्नातक डिग्री ले सकता है।इसके आगे विद्यार्थी न्यूनतम 184 क्रेडिट अर्जित करने पर चतुर्वर्षिय स्नातक (शोध सहित) डिग्री न्यूनतम 232 क्रेडिट अर्जित करने पर स्नातकोत्तर डिग्री तथा न्यूनतम 248 क्रेडिट अर्जित करने पर पी.जी.डी.आर. ले सकता है।एक बार क्रेडिट का उपयोग करने के पश्चात विद्यार्थी उन पेपर के क्रेडिट का उपयोग पुनः नहीं कर सकेगा। उदाहरण के लिए यदि कोई छात्र एक वर्ष के बाद 46 क्रेडिट का प्रयोग कर सर्टीफिकेट प्राप्त करता है तो उसके क्रेडिट खर्च माने जायेंगे। यदि वह कुछ वर्षों बाद डिप्लोमा लेना चाहता है,तो वह अपना मूल सर्टीफिकेट विश्वविद्यालय में जमा कर (Surrender) कर 48 क्रेडिट को खाते में री-क्रेडिट(Re-credit) करेगा अथवा नए 46 क्रेडिट पुनः जमा करेगा तथा जिसके आधार पर द्वितीय वर्ष वास्तविक (तृतीय वर्ष) में 92 (46+46) क्रेडिट अर्जित का डिप्लोमा ले

सकता है। इसी तरह की व्यवस्था आगामी वर्षों के लिए भी होगी।यदि विद्यार्थी लगातार अध्ययन करता है तथा सर्टिफिकेट डिप्लोमा नहीं लेता तो वह 132 क्रेडिट के आधार पर डिग्री ले सकता है।

9.5 यदि कोई योग्य छात्र (Fast learner) कम समय में डिग्री के लिए आवश्यक क्रेडिट प्राप्त कर लेगा तो न्यूनतम क्रेडिट प्राप्त करने पर अंतराल की सुविधा होगी,परंतु डिग्री तीन वर्ष बाद ही मिलेगी।अंतराल के दौरान वह किसी भी कार्य को करने के लिए स्वतंत्र होगा।

9.6 द्वितीय वर्ष में संकाय अथवा विषय परिवर्तन की स्थिति में अर्जित क्रेडिट सर्टिफिकेट की श्रेणी में आयेंगे न कि डिप्लोमा क्योंकि डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए उसे उसी विषय के आवश्यक ग्रेड प्राप्त करने होंगे।

9.7 तीन वर्ष में विद्यार्थी मुख्य विषयों के कुल क्रेडिट का न्यूनतम 60 प्रतिशत क्रेडिट जिस संकाय में प्राप्त करेगा उसी संकाय में उसे डिग्री दी जायेगी।

9.8 यदि विद्यार्थी तीन वर्ष में किसी एक संकाय में तीन मुख्य विषयों के कुल क्रेडिट का न्यूनतम 60 प्रतिशत क्रेडिट (112 का 60% अर्थात 67) क्रेडिट प्राप्त नहीं कर पाता है तो उसे बैचलर आफ लिबरल एजुकेशन (B.L.Ed)की डिग्री दी जायेगी तथा वह उन विषयों में स्नातकोत्तर कर सकेगा जिनमें स्नातक स्तर पर किसी विषय के पूर्व निर्धारित आवश्यक शर्तों (prerequisite) की आवश्यकता नहीं होगी।

9.9 यदि कोई योग्य छात्र सर्टिफिकेट डिप्लोमा लेकर अपने क्रेडिट री_ क्रेडिट(re_credit) कर लेता है और वह आगामी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो वह री-क्रेडिट किए गए क्रेडिट का उपयोग कर पुनः सर्टिफिकेट डिप्लोमा प्राप्त कर सकता है।

10. उपस्थिति एवं क्रेडिट निर्धारण:

उपस्थिति व क्रेडिट निर्धारण के संबंध में निम्न दिशा निर्देश दिए गए हैं :

10.1 क्रेडिट वेलिडेशन के लिए परीक्षा देना आवश्यक होगा। परीक्षा के बिना क्रेडिट अपूर्ण होंगे।

10.2 परीक्षा देने के लिए पूर्व नियमानुसार 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य होगी।

10.3 यदि कोई छात्र कक्षा में उपस्थिति के आधार पर परीक्षा के लिए अर्हता प्राप्त करता है परंतु किसी कारण से परीक्षा नहीं दे पाता तो आगामी समय में अर्हित परीक्षा दे सकता है। उसे पुनः कक्षाएं लेने की आवश्यकता नहीं होगी।

परीक्षा :

प्रत्येक सेमेस्टर में शिक्षार्थी को 4 प्रश्न पत्र अनिवार्य रूप से पढ़ने होंगे। सेमेस्टर के अंत में **75 अंक की लिखित परीक्षा** विश्वविद्यालय द्वारा कराई जाएगी। **25 अंक का आंतरिक मूल्यांकन** सभी प्रश्नपत्रों में विश्वविद्यालय/ महाविद्यालयों के संबंधित विभाग द्वारा कराया जाएगा, जिसमें 25 अंक का आवंटन/वितरण इस प्रकार होगा –

5 अंक उपस्थिति एवं अनुशासन पर।

5 अंक अधिन्यास पर (संबंधित प्राध्यापक द्वारा दिए गए अधिन्यास/एसाइनमेंट पेपर को छात्र-छात्राएं घर से लिखकर संबंधित शिक्षक के पास मूल्यांकन हेतु जमा करेंगे, जिनका मूल्यांकन उन्हीं शिक्षकों को करना है जो उस प्रश्नपत्र को पढ़ाते होंगे।)

15 अंक मिड-टर्म परीक्षा पर (मिड टर्म की परीक्षा महाविद्यालय स्तर पर आयोजित होगी। प्रश्नपत्र बनाने एवं मूल्यांकन कार्य का दायित्व संबंधित शिक्षक का होगा जो उस प्रश्न पत्र को पढ़ाते होंगे।)

मौखिकी/साहित्यिक दक्षता परीक्षण :

पूर्णांक 100 एवं क्रेडिट 4 की एक मौखिकी/साहित्यिक दक्षता परीक्षा विश्वविद्यालय द्वारा नामित वाह्य परीक्षक तथा प्राचार्य/विभागाध्यक्ष द्वारा नामित आंतरिक परीक्षक द्वारा निर्देशानुसार संपन्न कराई जाएगी। इस निमित्त संबंधित को नियमानुसार पारिश्रमिक देय होगा।

प्री-पी—एच.डी./पी–एच.डी. कोर्स वर्क कार्यक्रम

- पी-एच.डी. कार्यक्रम में प्रवेश एवं संचालन के नियम व अध्यादेश वीर बहादुर सिंह विश्वविद्यालय, जौनपुर में यू.जी.सी. के दिशा निर्देशों के अनुरूप मान्य/लागू होंगे।
- इसमें शोध परियोजना से पहले प्री. पी-एच.डी. कोर्स करना अनिवार्य होगा।
- यू.जी.सी. गाइड लाइन के निर्देशों के अनुरूप सभी विश्वविद्यालयों में प्री.पी-एच.डी.कोर्स की संरचना में एकरूपता लाने के लिए इस कोर्स वर्क में दो पेपर मुख्य विषय के **6-6 क्रेडिट** के होंगे तथा एक पेपर **4 क्रेडिट** का उस मुख्य विषय से संबंधित रिसर्च मेथाडोलॉजी का होगा। **16 क्रेडिट** के तीन पेपर्स के पाठ्यक्रम को विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम समिति निर्मित करेगी जिसे विद्वत् परिषद द्वारा अनुमोदित कराया जाएगा।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नियमावली-2016 के बिंदु संख्या 7.8 के अनुरूप प्री. पी-एच.डी. कोर्स के न्यूनतम उत्तीर्ण अंक 55% अथवा समकक्ष ग्रेड सी.जी.पी.ए.होंगे।
- शोधार्थी को थ्योरी पेपर्स के अतिरिक्त प्री.पी-एच.डी. कोर्स वर्क में एक शोध परियोजना करनी होगी। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय अध्ययन परिषद शोध परियोजना में मुख्य विषय की आधारभूत संरचना से सम्बन्धित शीर्षक पर परियोजना की स्वीकृति, विद्वान प्राध्यापक एवं विदुषी प्राध्यापिकाओं के निर्देशन में करने की स्वीकृति प्रदान करती है।
- पी-एच.डी. कोर्स वर्क के विद्यार्थी की ग्रेड सीट पर शोध परियोजना के प्राप्त अंकों पर आधारित ग्रेड तो अंकित होंगे परंतु उन्हें सी.जी.पी.ए.की गणना में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।
- प्री.पी-एच.डी. कोर्स वर्क में 16 क्रेडिट अर्जित करके उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थी को उस मुख्य विषय में पोस्ट ग्रैजुएट डिप्लोमा इन रिसर्च पी.जी.डी.आर. दिया जाएगा।
- प्री.पी-एच.डी.कोर्स वर्क उत्तीर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी को पी-एच.डी. में शोध के लिए पंजीकृत किया जाएगा।
- उत्तर प्रदेश शासन के शासनादेश संख्या 69/ सत्तर-1-2022 दिनांक : 06.01.2021 के अनुसार सेवारत शिक्षकों के लिए प्री–पी-एच.डी. कोर्स वर्क को पूर्ण करने के लिए भौतिक कक्षाओं के साथ-साथ ऑनलाइन प्रक्रिया को भी मान्यता प्रदान की है जिसके क्रम में सेवारत शिक्षकों के लिए ऑनलाइन कोर्स

वर्क संचालित करने की स्वीकृति शोध केंद्रों को प्रदान किए जाने की संस्तुति/स्वीकृति प्रदान की जाती है।

□ हिंदी विषय में पी-एच.डी. हेतु प्री.पी-एच.डी. कोर्स वर्क के तीन प्रश्न-पत्र (प्रथम–**वैचारिक एवं सैद्धांतिक विकास**, द्वितीय– **सामयिक शोध संदर्भ** तथा तृतीय–**शोध प्रविधि एवं कंप्यूटर** के) होंगे। प्रश्न-पत्रों का खण्ड एवं अंक विभाजन निम्नवत् होगा–

प्रश्नपत्रों का खण्ड विभाजन :

प्रत्येक प्रश्नपत्र **तीन खण्डों** में विभाजित होंगे— खण्ड-अ, खण्ड-ब तथा खण्ड-स।

खण्ड-अ : इस खण्ड में सम्बंधित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से अतिलघूत्तरीय प्रकार के कुल **10 प्रश्न** पूछे जाएंगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए **2 अंक** निर्धारित है। इस प्रकार, इस खंड में कुल 10×2=**20 अंक** निर्धारित है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए अधिकतम **शब्द-सीमा 50** होगी।

खण्ड-ब : इस खंड में सम्बंधित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से लघूत्तरीय प्रकार के कुल 8 प्रश्न मुद्रित होंगे, जिनमें से **5 प्रश्नों** के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए **7 अंक** निर्धारित है। इस प्रकार, इस खंड में कुल 5×7=**35 अंक** निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए अधिकतम **शब्द-सीमा 200** होगी।

खण्ड-स : इस खंड में सम्बंधित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से निबंधात्मक-समीक्षात्मक प्रकार के कुल **4 प्रश्न** मुद्रित होंगे, जिनमें से केवल **2 प्रश्नों के** उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए **10 अंक** निर्धारित है। इस प्रकार, इस खंड में कुल 2×10=**20 अंक** निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए अधिकतम **शब्द-सीमा 500** होगी।

प्रत्येक प्रश्नपत्र हेतु अंक विभाजन सारणी

खण्ड-अ : अतिलघूत्तरीय प्रश्न (शब्द सीमा- 50)	10×2 = 20 अंक
खण्ड-ब : लघूत्तरीय प्रश्न (शब्द-सीमा - 200)	5×7 = 35 अंक
खण्ड-स : निबंधात्मक प्रश्न (शब्द सीमा - 500)	2×10 = 20 अंक

प्री—पी-एच. डी./ पी-एच.डी. कोर्स वर्क पाठ्यक्रम का विस्तृत विवरण :

प्री—पी-एच. डी./ पी-एच.डी. कोर्स वर्क			**सेमेस्टर-XI**	
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्न-पत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**
प्रथम	**A011101T**	**वैचारिक एवं सैद्धांतिक विकास**	**6**	**25+75=100**

इस पाठ्यक्रम द्वारा अनुसन्धित्सु साहित्य का प्रयोजन, प्रासंगिकता एवं सामाजिक उपादेयता को समझ सकेंगे तथा हिंदी साहित्य के आदिकाल व भक्तिकाल की वैचारिकी व उसके सैद्धांतिक विकास को जान सकेंगे। साथ ही हिंदी साहित्येतिहास दर्शन, इतिहास लेखन परम्परा एवं समकालीन साहित्यिक विमर्शों और उनके सामाजिक सरोकारों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे जो उनके शोधकार्य हेतु विस्तृत फलक प्रदान करेगा।

इकाई-1 : साहित्य का स्वरूप परंपरा एवं आधुनिक संदर्भ, साहित्य का प्रयोजन, साहित्य की प्रासंगिकता, विचारधारा और साहित्य की उपादेयता।

इकाई-2 : हिंदी साहित्य का आदिकालीन काव्य– नाथ, सिद्ध एवं जैन साहित्य, मध्यकालीन बोध का स्वरुप,भक्तिकाल की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियां,भक्ति आंदोलन और लोक चेतना, विभिन्न दार्शनिक मत–अद्वैतवाद विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद।

इकाई-3 : सूफी मत का विकास, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन, पुष्टिमार्ग के सिद्धांत,कबीर और जायसी का साहित्यिक और सांस्कृतिक अवदान, संत कवियों की लोक चेतना।

इकाई-4 : राम भक्ति काव्य और कृष्ण भक्ति काव्य में चित्रित भारतीय संस्कृति और लोक जीवन,सूरदास और उनकी लोक दृष्टि, तुलसीदास का समन्वयवाद, भक्तिकाव्य का साहित्यिक और सांस्कृतिक अवदान, रीतिकालीन कवियों की लोक चेतना।

इकाई-5 : हिंदी साहित्य का इतिहास और इतिहास दर्शन,हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा,हिंदी साहित्य के इतिहास का समीक्षात्मक इतिहास,हिंदी आलोचक और आलोचना,हिंदी कथा साहित्य कथेतर गद्य लेखन परंपरा।

इकाई-6 : समकालीन साहित्य के विविध संदर्भ: स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, सामाजिक चिंतन के अन्य विविध सरोकार।

सहायक ग्रंथ :

1. मध्यकालीन बोध का स्वरूप – हजारी प्रसाद द्विवेदी, वाणी प्रकाशन
2. साहित्य का स्वरुप – डॉ. ब्रजलाल गोस्वामी, साहित्य संगम, लुधियाना
3. भारत : इतिहास और संस्कृति – मुक्तिबोध, राजकमल, दिल्ली
4. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास– डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी
5. आधुनिकता और हिंदी साहित्य – इंद्रनाथ मदान, राजकमल, दिल्ली
6. साहित्य का इतिहास दर्शन – नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
7. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
8. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
9. इतिहास और आलोचक दृष्टि – डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. दलित साहित्य का स्वरुप : विकास और प्रवृत्तियां – डॉ. गुणशेखर, न्यू पब्लिशर्स
11. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र–शरण कुमार लिंबाले, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
12. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श – जगदीश्वर चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13. स्त्रीवादी विमर्श : समाज और साहित्य – क्षमा शर्मा

प्री—पी-एच. डी./पी-एच.डी. कोर्स वर्क			**सेमेस्टर-XI**	
प्रश्न-पत्र	**प्रश्न-पत्र कोड**	**प्रश्न-पत्र शीर्षक**	**क्रेडिट**	**पूर्णांक**
द्वितीय	**A011102T**	**सामयिक शोध संदर्भ**	**6**	**25+75=100**

इस पाठ्यक्रम द्वारा शोध के सामयिक मुद्दों एवं सन्दर्भों का ज्ञान होगा। आधुनिकता बोध, पुनर्जागरण, लोकजागरण, नवजागरण के साथ ही विभिन्न पाश्चात्य एवं भारतीय वाद और साहित्यिक अध्ययन के विविध पक्षों की जानकारी होगी। हिंदी की प्रयोजनमूलकता, मीडिया, चलचित्र और जनसंचार माध्यमों में हिंदी की उपयोगिता एवं स्थिति को जान सकेंगे। शोध द्वारा राष्ट्रप्रेम, मानवता, विश्व बंधुत्व का प्रसार करने एवं उसे मानवोपयोगी बनाने की दिशा में क्रियाशील हो सकेंगे।

इकाई-1 : आधुनिक बोध का स्वरूप,परंपरा और आधुनिकता, मध्ययुगीन बोध और आधुनिक बोध में साम्य और वैषम्य, राष्ट्रीयता और अंतरराष्ट्रीयता।

इकाई-2 : पुनर्जागरण और भारतेंदु का काव्य, द्विवेदी युग और लोकजागरण, छायावाद और अध्यात्मवाद, गांधीवाद,लोकतंत्र के कल्याणकारी स्वरूप एवं भारतीय लोकतंत्र।

इकाई-3 : मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद,अस्तित्ववाद उत्तर आधुनिकतावाद समाजवाद।

इकाई-4 : स्त्री विमर्श,दलित चेतना, आंचलिकता और महानगरीय बोध,भूमंडलीकरण, साहित्य का समाजशास्त्र, साहित्य का इतिहास दर्शन, साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन।

इकाई-5 : प्रयोजनमूलक हिंदी और मीडिया, मीडिया और समाज, साहित्य और मीडिया, साहित्य और चलचित्र, हिंदी साहित्य के विकास में जनसंचार माध्यमों का योगदान।

इकाई-6 : साहित्यिक शोध के सामाजिक सरोकार,मानवता, विश्व बंधुत्व, राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र प्रेम, साहित्यिक सृजन के विविध सरोकार।

सहायक ग्रंथ :

1. आधुनिकता और हिंदी साहित्य – इंद्रनाथ मदान, राजकमल, दिल्ली
2. साहित्य का इतिहास दर्शन – नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
3. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
4. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
5. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – डॉ. रामविलास शर्मा
6. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएं – डॉ. रामविलास शर्मा
7. इतिहास और आलोचक दृष्टि – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. तुलनात्मक साहित्य – डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
9. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ – के. सच्चिदानंदन, राजकमल, नई दिल्ली
10. भारतीय साहित्य की भूमिका – डॉ. रामविलास शर्मा
11. आधुनिक हिंदी आलोचना के बीजशब्द – डॉ. बच्चन सिंह
12. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली– डॉ. अमरनाथ उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. प्रयोजनमूलक हिंदी– दिनेश प्रसाद सिंह
14. प्रयोजनमूलक हिंदी– डॉ. विनोद गोदरे
15. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका– कैलाशनाथ पांडेय
16. प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रक्रिया और स्वरूप– कैलाश चन्द्र भाटिया
17. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र–शरण कुमार लिंबाले, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
18. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श – जगदीश्वर चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
19. स्त्रीवादी विमर्श : समाज और साहित्य – क्षमा शर्मा
20. साहित्य और संस्कृति – मोहन राकेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

प्री—पी-एच. डी./पी-एच. डी. कोर्स वर्क	**सेमेस्टर-XI**

प्रश्न-पत्र	प्रश्न-पत्र कोड	प्रश्न-पत्र शीर्षक	क्रेडिट	पूर्णांक
तृतीय	A011103T	शोध प्रविधि एवं कंप्यूटर	4	25+75=100

शोध एक सुव्यवस्थित, सुसंगत एवं क्रमबद्ध प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को स्तरीय बनाने एवं मानकता प्रदान करने हेतु शोध प्रविधि का ज्ञान कराना इस प्रश्न-पत्र का उद्देश्य है। इस प्रश्न-पत्र के अध्ययनोपरांत बढ़ते हुए संचार-प्रौद्योगिकी एवं तकनीक के इस दौर में शोधार्थी कम्प्यूटर और इंटरनेट में दक्षता हासिल कर अपनी शोध प्रक्रिया को और भी अधिक आधुनिक, सहज, सामयिक, प्रासंगिक एवं जीवनोपयोगी बना सकेंगे।

इकाई-1 : शोध क्या है? शोध : परिभाषा और महत्व, दक्ष शोधकर्ता में अपेक्षित गुण, शोध के प्रकार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में शोध, कला एवं साहित्य में शोध,सामाजिक विज्ञान में शोध, रचना आलोचना एवं शोध के अंत:संबंध, शोध और मौलिकता।

इकाई-2 : शोध जिज्ञासा, समस्या का निर्धारण और समस्या कथन की रचना,विषय के चयन में सावधानियां,परिकल्पना,शोध की सीमा एवं लक्ष्य निर्धारण,शोध सिद्धांतिकी का निर्माण,शोध के सामाजिक सरोकार

इकाई-3 : शोध अधिकल्पन, रूपरेखा एवं अध्यायीकरण, सामग्री एवं आंकड़ों का संकलन, वर्गीकरण एवं विवेचन, प्रेक्षण, विभिन्न शोध प्रणालियां,अंतर्वस्तु विश्लेषण,शोध प्रबंध का आकार प्रकार, उद्धरण का उपयोग एवं सावधानियां,शोध की भाषा,संदर्भ सूची एवं सहायक ग्रंथों का प्रस्तुतिकरण, टंकण,प्रूफ सम्बन्धी कार्य

इकाई-4 : कंप्यूटर का सामान्य परिचय,उपयोग,क्षेत्र,कंप्यूटर: हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर,कंप्यूटर–संरचना इनपुट डिवाइस,सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट,आउटपुट डिवाइस,मेमोरी स्मृति उनके प्रकार, हार्ड डिस्क, पेन ड्राइव,इंटरनेट प्रविधि, उपयोगिता एवं महत्व ईमेल प्रविधि आदि।

सहायक ग्रंथ :

1. शोध प्रविधि–विनय मोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली
2. अनुसंधान प्रविधि और क्षेत्र–राजमल बोरा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. अनुसंधान का स्वरूप–सावित्री सिन्हा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. अनुसंधान की समस्याएं–(संपा.) सावित्री सिन्हा व विजयेंद्र स्नातक, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
5. हिंदी शोधतंत्र की रूपरेखा–डॉ. मनमोहन सहगल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
6. शोध : स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्यविधि, बैजनाथ सिंघल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. अनुसंधान प्रविधि : सिद्धांत और प्रक्रिया – एम.एन. गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. शोध प्रविधि– डॉ0 विनय मोहन शर्मा
9. अनुसंधान की प्रक्रिया– सम्पा. (डॉ0) सावित्री सिन्हा, (डॉ0) विजयेंद्र स्नातक
10. शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि– डॉ0 बैजनाथ सिंघल
11. हिंदी शोध तंत्र की रूपरेखा– डॉ0 मनमोहन सहगल
12. शोध प्रविधि : अद्यतन दृष्टि– डॉ. गंगेश दीक्षित
13. हिंदी अनुसंधान– डॉ. विजयपाल सिंह
14. हिंदी कम्प्यूटिंग–त्रिभुवननाथ शुक्ल, विकास प्रकाशन, कानपुर
15. हिंदी कम्प्यूटिंग–डॉ. रामगोपाल सिंह 'जादौन', आकाश पब्लिशर्स, कानपुर, 2017
16. कम्प्यूटर एवं सूचना तकनीक, इन्नोवेयर एकेडमिक साइंस और डिस्ट्रीब्यूटर्स, गाजियाबाद, प्रा. लि., 2018

डॉ.(अमलदार "नीहार")	प्रो.(अनुराग कुमार)	प्रो.(विनय कुमार दूबे)
वाह्य विशेषज्ञ	वाह्य विशेषज्ञ	संयोजक
डॉ.(संजय चतुर्वेदी)	डॉ.(ऊषा भारती)	डॉ.(अखिलेश कुमार शर्मा शास्त्री)
परास्नातक सदस्य	परास्नातक सदस्य	स्नातक सदस्य
डॉ.(मधूलिका मिश्रा)	डॉ.(संजय कुमार सुमन)	डॉ.(सुरेन्द्र प्रताप सिंह यादव)
स्नातक सदस्य	परास्नातक सदस्य	स्नातक सदस्य